Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

> छ काय मारण रो त्याग,
> कोई पचखें आंण वेंराग।
> अभयदान कह्यो जिणराय,
> धर्मदांन में मिलियो आय।।
>
> वैराग्य भाव से कोई छह काय के जीवों को मारने का त्याग-प्रत्याख्यान करता है, वह अभयदान कहा गया है। वह धर्म-दान का अंग है।
>
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 19 • 10 फरवरी - 16 फरवरी, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 08-02-2025 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

सर्व मर्यादा कबूल छै

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में भारत के गुजरात प्रदेश में आयोजित प्रथम मर्यादा महोत्सव कच्छ जिले के भुज नगर में एकादशम अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में मनाया गया। भुज के स्मृतिवन परिसर में बने जय मर्यादा समवसरण में 161वें मर्यादा महोत्सव पर आचार्य प्रवर ने चतुर्विध धर्म संघ को अनुशासन, सेवा तथा मर्यादा का महत्व समझाते हुए उन्हें अपने जीवन का महत्वपूर्ण अंग बनाने हेतु प्रेरित किया।

- आचार्यप्रवर, साध्वी प्रमुखाश्री, मुख्यमुनिश्री एवं साध्वी वर्याश्रीजी के हुए प्रेरक उद्बोधन।
- मुनिवृंद, साध्वी वृंद, समणी वृंद, मुमुक्षु बहनों और उपासक श्रेणी ने किया मंगल संगान।
- बसंत पंचमी के दिन हुई सेवा केंद्रों के सेवादायी सिंघाड़ों की घोषणा।
- आचार्य प्रवर द्वारा दी गई चतुर्विध धर्मसंघ को कल्याणकारी प्रेरणा।
- शिखर दिवस पर हुई देश भर में विचरण कर रहे साधु-साध्वियों के विहार एवं चातुर्मास की घोषणा।

मर्यादा पत्र है धर्मसंघ की छत्र छाया रखने वाला : युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण

स्मृतिवन-भुज।
4 फ़रवरी, 2025

नंदनवन भैक्षव शासन के 161वें मर्यादा महोत्सव के त्रि-दिवसीय समारोह के तृतीय एवं मुख्य दिवस कार्यक्रम का शुभारम्भ युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। मुनि दिनेशकुमारजी ने मर्यादा घोष का उच्चारण और 'मर्यादा गीत' का संगान कराया। मर्यादाओं के प्रति सजग करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम ने अपनी ओजस्वी वाणी में फ़रमाया - हम धर्म से जुड़े हुए हैं और आज हम एक धर्म संघ के मर्यादा महोत्सव समारोह से भी जुड़े हुए हैं। भगवान महावीर के इस शासन में अनेक आम्नाय हैं। श्वेतांबर परंपरा में भी अनेक संप्रदाय हैं, जिनमें से एक है - 'तेरापंथ धर्म संघ'।

हमारे इस तेरापंथ धर्म संघ की स्थापना विक्रम संवत 1817 में हुई थी। वर्तमान में इस धर्म संघ को 264 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और 265वाँ वर्ष चल रहा है। इस धर्म संघ के संस्थापक एवं प्रथम आचार्य श्रीमद् भिक्षु स्वामी थे। वे हमारे धर्म संघ के जनक हैं और हम मानों उनकी संतानें हैं।

मर्यादा पत्र है गण छत्र

आचार्य भिक्षु ने धर्म संघ के लिए कई मर्यादाएँ लिखीं। उनका एक महत्वपूर्ण 'लिखत' विक्रम संवत 1859, माघ शुक्ल सप्तमी के दिन लिखा गया था, जो आज भी हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। लगभग 222 वर्ष पूर्व लिखित यह पत्र मानो गण छत्र है, हमारे धर्मसंघ की छत्र छाया रखने वाला है। इस मर्यादा पत्र की भावनाओं को मूल मानते हुए यह मर्यादा महोत्सव आयोजित किया जाता है। मर्यादा महोत्सव की परंपरा हमारे चतुर्थ आचार्य श्रीमद जयाचार्य द्वारा विक्रम संवत 1921 में राजस्थान के बालोतरा से प्रारंभ की गई थी।

तेरापंथ धर्म संघ की आचार्य परंपरा

हमारे धर्म संघ में आचार्य परंपरा का एक सुव्यवस्थित क्रम है। हमारा धर्म संघ 10 आचार्यों के शासन काल को देख चुका है। भारत में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है, चूँकि यह संविधान से जुड़ा हुआ है इसलिए यह भी एक दृष्टि से भारत का मर्यादा महोत्सव है। मर्यादा महोत्सव के निमित्त से बहिर्विहार में विचरण करने वाले अनेक साधु-साध्वियों को आचार्यों की उपासना का अवसर मिल जाता है। यह अवसर प्रशिक्षण के रूप में भी सार्थक हो सकता है।

आचार्य का निर्णय कौन करे?

तेरापंथ धर्म संघ में भावी आचार्य का चयन केवल वर्तमान आचार्य द्वारा किया जाता है। इस कार्य के लिए समाज के लोगों, ट्रस्टियों या साधु-साध्वियों की कोई समिति नहीं बैठती। वर्तमान आचार्य जब उपयुक्त समझते हैं, तब भावी आचार्य की घोषणा कर सकते हैं। यह एकमात्र वर्तमान आचार्य का ही अधिकार है।

हमारे धर्मसंघ में एक आचार्य के नेतृत्व की व्यवस्था है। आचार्य की आज्ञा से ही साधु-साध्वियां विहार-चतुर्मास करते हैं। इस नियम में 265 वर्षों में आज तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ। हमारे यहां साधु-साध्वियां भी हैं और समणश्रेणी भी हैं। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के समय इस श्रेणी का प्रारम्भ हुआ है। ये साध्वियां तो नहीं हैं, किन्तु अनेक अंशों में साध्वियों के समान ही हैं। आचार्यों की दृष्टि के बिना आज तक कोई चतुर्मास नहीं हुए हैं। जहां आचार्य विहार के लिए कह दें, वहां विहार करने की मर्यादा है। कोई भी साधु-साध्वी अपना-अपना शिष्य-शिष्याएं न बनाएं। कभी-कभी साधु-साध्वी आचार्य की दृष्टि से दीक्षा तो सकते हैं, किन्तु वह शिष्य तो आचार्य का ही होता है। आचार्यश्री भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करते हैं और कोई दीक्षा के

> समान नागरिक संहिता की बात चल रही है पर हमारे यहाँ तो सबके लिए एक समान विधान है। एक आचार्य के नेतृत्व में रहना, यही विधान साधुओं के लिए है, यही विधान साध्वियों के लिए है। आगे कहूं तो यही विधान श्रावकों के लिए है, यही श्राविकाओं के लिए, यही विधान समणियों, मुमुक्षु बाइयों के लिए। धार्मिक नियम - उपासना की बात है वहां जो निर्णय आचार्य दें वो समस्त श्रावक-श्राविका समाज के लिए मान्य होता है।

बाद भी अयोग्य निकले तो उसे गण से बाहर कर सकते हैं। योग्यता देखकर ही दीक्षा देनी चाहिए। आचार्य अपने गुरुभाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुने तो उसे सभी साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करते हैं। पूरे धर्मसंघ में इन पांच मर्यादाओं का सम्यक् और दृढ़ता के साथ पालन हो रहा है।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि मैं साधु-साध्वियों रूपी गण को प्रणाम करता हूं। तेरापंथ धर्म संघ का इतिहास 265 वर्षों का है, लेकिन आज तक इसमें दो या अधिक आचार्यों की व्यवस्था नहीं रही। यह इसकी विशिष्टता और एकता को दर्शाता है। हमारा यह धर्म संघ संगठित और अनुशासित संघ है, जहाँ परंपराएँ और मर्यादाएँ अक्षुण्ण बनी हुई हैं। हमारे धर्म संघ में समय-समय पर आवश्यक परिवर्तनों को अपनाते हुए मौलिकता को सुरक्षित रखा गया है। तेरापंथ प्रभु का पंथ है, जो धर्म और साधना का मार्ग प्रशस्त करता है। परम पूजनीय आचार्यों ने समाज को अनुशासन, साधना और आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए हैं। साधु-साध्वियों के लिए अनुशासन संहिता और मर्यादावली है। श्रावक-श्राविका समाज के लिए 'श्रावक संदेशिका' है, जो उनके लिए अत्यंत उपयोगी है।

> कुछ वर्षों से शनिवार की सामायिक की परंपरा शुरु हुयी है। स्टेशन, एयरपोर्ट आदि स्थानों पर भी समय है तो वहां पर भी सामायिक कर सकते हैं। किसी के घर में शादी है और शनिवार आ गया और समय हो तो पहले सामायिक करलें। अवसर हो, उचित हो और भावना हो तो कंवर सा को भी कह दें - आज तो आप भी सामायिक करलो। जितना संभव हो शनिवार को सामायिक करने का प्रयास रहे।

शनिवार की सामायिक

श्रावक समाज में शनिवार की परंपरा भी वर्षों से चली आ रही है। समाज में इसका प्रचार-प्रसार हो रहा है और इसे विभिन्न स्थानों—घर, कार्यालय, यात्रा में भी अपनाया जा सकता है।

सुमंगल साधना

श्रावक-श्राविकाओं के लिए 'सुमंगल साधना' का विशेष महत्व है, जो कठोर व्रत और नियमों से युक्त होती है। इस साधना को अपनाने से आत्मिक शुद्धि प्राप्त होती है।

सन्यास का महत्व

सन्यास, जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। एक साधु की साधना और त्याग अनमोल होते हैं, जो सांसारिक संपत्तियों से अधिक मूल्यवान हैं। साधुपन अत्यंत सौभाग्यशाली व्यक्ति को प्राप्त होता है। हमारा साधुपन निर्मल रहना चाहिए और समणियों का संन्यास भी।

> समाज की संस्थाओं को दो नंबर के पैसे से यथा संभव बचने का प्रयास करना चाहिए। पैसा भले ही कम आए, अनैतिकता की बात न हो। आपको कोई कह दे कि दो नंबर का पैसा है - तो आप कहें - नहीं चाहिए, नहीं चाहिए।

संस्थाएं समाज का सौभाग्य

हमारे धर्मसंघ में अनेक केन्द्रीय, आंचलिक व स्थानीय संस्थाएँ हैं, जो जागरूक होकर कार्य कर रही हैं। ये संस्थाएं समाज के सौभाग्य की बात है। कल्याण परिषद एक ऐसा मंच है, जहां योजनाओं पर निर्णय होता है और उसका पालन भी होता है। विकास परिषद भी है, वह भी कल्याण परिषद के अंतर्गत ही है।

हमारे धर्मसंघ में ज्ञानशाला जैसी अनेक गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं, जो अत्यंत उपयोगी हैं। (पेज-3 पर जारी)

तेरापंथ धर्म संघ में एकता के पाँच महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं

1. **एक आचार –** पूरे संघ का मान्य आचार एक ही है।
2. **एक विचार –** पूरे संघ में सिद्धांत, तात्त्विक और संघीय मान्यता एक होती है।
3. **एक आचार्य –** पूरे संघ में केवल एक ही आचार्य होते हैं जो पूरे संगठन का नेतृत्व करते हैं।
4. **एक विधान –** संघ में सभी साधु-साध्वियों के लिए एक ही विधान लागू होता है।
5. **एक गुरु के शिष्य –** सभी साधु-साध्वियाँ केवल आचार्य के शिष्य होते हैं, किसी साधु या साध्वी के व्यक्तिगत शिष्य नहीं होते।

उपासकश्रेणी भी महासभा के तत्त्वावधान में चल रही है। पर्युषण में उनका अच्छा उपयोग हो और कभी संथारे की बात हो, जहां साधु-साध्वियां न हों, समणियां न हों तो उपासक-उपासिकाएं संथारा करा सकते हैं। प्रेक्षा-ध्यान, जीवन विज्ञान व अणुव्रत जैसी लोक कल्याणकारी गतिविधियाँ भी निरंतर चल रही हैं। इस वर्ष प्रेक्षा-कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। पूज्यवर ने प्रेक्षा-ध्यान का संक्षिप्त प्रयोग भी करवाया।

संघ को नवीन दिशा-निर्देश

900 मीटर तक No पदत्राण

- साधु-साध्वियों को जहाँ तक संभव हो, पदत्राण का न्यूनतम उपयोग करना चाहिए। प्रवास स्थल से 900 मीटर की दूरी तक सामान्यतया पदत्राण का उपयोग ना हो, विशेष आवश्यकता हो तो यह अलग बात है।
- 75 वर्ष से कम आयु के साधु-साध्वियों को नए रूप से इनर का उपयोग नहीं करना चाहिए।

भगवान ऋषभदेव दीक्षा कल्याणक - चैत्र कृष्ण नवमी

- भगवान ऋषभदेव का दीक्षा कल्याणक दिवस चैत्र कृष्ण नवमी को मनाया जाना चाहिए — यह हम व्यवहार में स्थापित कर रहे हैं। वर्षीतप का प्रारंभ चैत्र कृष्ण अष्टमी से ही किया जाए।
- आचार्य भिक्षु का जन्म त्रि-शताब्दी वर्ष प्रारंभ आगामी आषाढ़ शुक्ला 13 से होने जा रहा है, जिसे 'भिक्षु चेतना वर्ष' की संज्ञा दी गई है।

नया चिंतन - 'सुप्रणिधान साधना'

- हमने एक नया चिंतन किया है— साधु-संस्था के लिए एक विशेष साधना, जिसे 'सुप्रणिधान साधना' का नाम दिया गया है। यह एक विशिष्ट साधना है, जिसे 75 वर्ष की आयु पार कर चुके साधु-साध्वियाँ अपनी इच्छानुसार स्वीकार कर सकते हैं।

दीक्षा के लिए उम्र सीमा पर नहीं, कसौटियों पर उतरना होगा खरा

- 161वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने धर्मसंघ को संबोधित करते हुए कहा कि पहले पुरुषों की दीक्षा में 50 वर्ष की सीमा लगी हुई थी। आचार्यश्री ने उसे खोलते हुए कहा कि जिस अवस्था के व्यक्ति की दीक्षा की इच्छा होगी, यदि वह हमारी कसौटियों पर खरा उतरेगा, उसे दीक्षा प्रदान की जा सकती है। परंतु संथारे में दीक्षा की बात अभी तक स्वीकार नहीं की गयी है।

अहमदाबाद चातुर्मास में दीक्षा समारोह

- पूज्यवर ने 8 मुमुक्षु भाई-बहनों को भाद्रपद शुक्ल एकादशी को अहमदाबाद में दीक्षा की अनुमति प्रदान की। चार मुमुक्षु बहनों को समणी दीक्षा देने की भी घोषणा की।
- मुमुक्षु मनोज संकलेचा को साधु प्रतिक्रमण सीखने की स्वीकृति प्रदान की गई।

मर्यादा पत्र का वाचन

पूज्यवर ने मर्यादा महोत्सव के अवसर पर रचित नूतन गीत— 'करें हम आध्यात्मिक उत्थान रे, शुभ ध्यान रे, जैनागम वांग्मय ज्ञान' का सुमधुर संगान करवाया। आचार्यश्री ने आचार्य भिक्षु द्वारा राजस्थानी भाषा में लिखित अंतिम मर्यादा पत्र का वाचन करते हुए चारित्रात्माओं को त्याग भी कराया। तदुपरान्त विशाल प्रवचन पण्डाल में एक ओर संतवृंद, दूसरी ओर साध्वीवृंद और मध्य में समणीवृंद ने पंक्तिबद्ध होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। इस अवसर पर 43 साधु और 53 साध्वियां और 43 समणियों की उपस्थिति रही। तदुपरांत पूज्य प्रवर ने श्रावक समाज को श्रावक निष्ठा पत्र का उच्चारण करवाया।

विहार, चातुर्मास एवं प्रेरणा

आचार्यश्री ने देश के विभिन्न हिस्सों में साधु-साध्वियों के विहार एवं चतुर्मासों की घोषणा की। साथ ही आचार्यश्री ने विदेशों और देश के अन्य हिस्सों में स्थित श्रावक समाज को लाभान्वित करने के लिए समणी केंद्र व उपकेन्द्र की घोषणा की। आचार्यश्री ने आगे प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि तेरापंथ समाज के सदस्य कहीं भी रहे, कहीं भी जाए, मांसाहार व शराब आदि के सेवन से बचने का प्रयास करना चाहिए।

अपनी निंदा का जवाब अपने अच्छे कार्यों से देने का प्रयास करना चाहिए। संयम के साथ अपना अच्छा कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। समाज की संस्थाओं में नैतिकता रखने का प्रयास करना चाहिए। दूसरों का कल्याण हो, इसके लिए दूसरों की सेवा का भी प्रयास करना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाजी, साध्वीवर्याजी व मुख्यमुनिजी धर्मसंघ को अपनी सेवाएं दे रहे हैं और भी साधु-साध्वियां चाहे गुरुकुलवास में हों या न्यारा में, वे अपने ढंग से कार्यों में ध्यान देते हैं। कई संत कई संस्थाओं के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। कई साध्वियां आगम के कार्य और अन्य सेवा के कार्य से जुड़ी हुई हैं। समण श्रेणी के सदस्य भी कोई देश में, कोई विदेश में, कोई जैन विश्व भारती में, कोई धर्म प्रचार में अपनी सेवा देते हैं। मुमुक्षु बाइयाँ तो अभी पालने में झूल रही हैं। ये भी पर्युषण की यात्रा में जाती हैं। कभी अपेक्षा पड़ गयी तो साध्वियों को रास्ते की सेवा में इनका सहयोग मिलता है। सभी अपने कार्य में जुटे रहें।

(पेज-4 पर जारी)

161वें मर्यादा महोत्सव पर आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा की गई घोषणाएँ

1. चारित्रात्माएँ प्रवास स्थल के 900 मीटर तक पदत्राण का उपयोग नहीं करें।
2. 75 वर्ष से कम आयु के साधु-साध्वियों के लिए नए रूप से इनर का उपयोग न करने का निर्देश।
3. चैत्र कृष्ण नवमी को भगवान ऋषभदेव दीक्षा कल्याणक दिवस के रूप में मनाने की घोषणा।
4. आगामी आषाढ़ शुक्ला 13 से आचार्य भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी वर्ष - 'भिक्षु चेतना वर्ष' का होगा शुभारम्भ।
5. 75 वर्ष की आयु पार कर चुके साधु-साध्वियों के लिए एक विशिष्ट साधना 'सुप्रणिधान साधना' को अपनाने का विकल्प।
6. पुरुषों की दीक्षा के लिए 50 वर्ष की सीमा हटाई गई।
7. भाद्रपद शुक्ल एकादशी को 8 मुमुक्षुओं की होगी मुनि दीक्षा। चार मुमुक्षु बहनें बनेंगी समणी।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
10 फरवरी - 16 फरवरी, 2025

161वें मर्यादा महोत्सव के उपलक्ष में युगप्रधान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

करें हम आध्यात्मिक उत्थान रे, शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।
तरें हम भवसागर व्यवधान रे, मतिमान रे, पा जाएं मोक्ष स्थान।।

जिन शासन का सुखकर साया, भैक्षव शासन हमने पाया।
दस गुरुओं की शीतल छाया, वर्तमान गतिमान रे।।1।।
शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।

धर्मसंघ की पावन सेवा, करें भाव से पाएं मेवा।
वृद्धों रुग्णों सापेक्षों की परिचर्या शासन शान रे।।2।।
शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।

आत्म साधना साम्य हमारा, गण से उसमें मिले सहारा।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है, आत्मा की हो पहचान रे।। 3।।
शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।

आज्ञा के प्रति सतत सजगता, प्रभु चरणों में श्रद्धानतता।
सहज समर्पण रहे प्रखरतम, बन पाएं सुविनयवान रे।।4।।
शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।

पांच महाव्रत पांच रत्न हैं, उनका रखना प्रवर यत्न है।
तेरह नियमों वाला प्रभुवर ! तेरापंथ महान रे।।5।।
शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।

एकाचार विचार एकता, एकाचार्य विधान नेकता।
शिष्य सम्पदा एक सुगुरु की पंचामृत पुण्य निधान रे।।6।।
शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।

गुर्जर प्रान्त कच्छ भुज नगरी मर्यादोत्सव गौरव गगरी।
धर्म अहिंसा-संयम-तपमय, मंगल नन्दन उद्यान रे।।7।।
शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।

वीर भिक्षु तुलसी बालूसुत 'महाश्रमण' प्रभुपद श्रद्धायुत।
प्रगति पन्थ पर बढ़ते जाएं प्रभुवर आस्था-आस्थान रे।।8।।
शुभ ध्यान रे, जैनागम वाङ्मय ज्ञान।

लय– धरा पर उतरा स्वर्ग

अपना फर्ज निभाओ, संघ कहे – हम इसकी शान हैं

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि वे ही संगठन चिरजीवी होते हैं जिनके पीछे सिद्धांत और सच्चाई का बल होता है। तेरापंथ धर्मसंघ 264 वर्षों के बाद भी चिरजीवी बना हुआ है, और इसका प्रमुख कारण इसकी मर्यादा और अनुशासन है। मर्यादा प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी होती है, चाहे वह समाज हो, परिवार हो, राजनीति हो या शिक्षा का क्षेत्र। जहाँ मर्यादा होती है, वहाँ निश्चित रूप से विकास भी होता है। विकास के लिए मर्यादाओं का होना आवश्यक है। आचार्य भिक्षु ने अपने अनुभव के आधार पर मर्यादाएँ निर्धारित कीं, और इन्हीं के आधार पर मर्यादा महोत्सव मनाया जाता है।

> श्रावक-संदेशिका पुस्तक है यह श्रावक-श्राविकाओं के लिए पठनीय है, उपयोगी है। अनेक त्याग, नियम की बातें इसमें सन्निहित हैं।

मर्यादा का निर्माण वही कर सकता है, जिसे अंतर्दृष्टि प्राप्त हो, जो भविष्य-दर्शन रखता हो और जो देश, काल एवं भाव का ज्ञाता हो। आचार्य भिक्षु कानून के अध्येता नहीं थे, उनके पास किसी विश्वविद्यालय की कोई डिग्री नहीं थी, किंतु वे अनुभव संपन्न थे। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर मर्यादाओं को निर्धारित किया। उनके द्वारा लिखित मर्यादाएँ आज भी तेरापंथ धर्मसंघ की आधारशिला बनी हुई हैं। आचार्य भिक्षु ने जब इन मर्यादाओं को लिखा, तब उन्होंने शायद यह कल्पना भी नहीं की होगी कि भविष्य में इन्हीं मर्यादाओं के आधार पर मर्यादा महोत्सव मनाया जाएगा। लेकिन परम पूज्य श्रीमद जयाचार्य ने अपनी दूरदर्शिता से इन मर्यादाओं को महोत्सव का रूप प्रदान किया।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने कहा - आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओं के द्वारा तेरापंथ की बेंचमार्किंग की, श्रीमद् जयाचार्य ने इसकी ब्रांडिंग की, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें विश्वव्यापी पहचान दिलाई। वर्तमान में परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण तेरापंथ धर्मसंघ की महिमा को सहस्र गुना बढ़ा रहे हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री ने अपने वक्तव्य को पूर्ण करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को संघ के लिए कुछ करने की प्रेरणा देते हुए कहा - "इतना ही ना कहे कि संघ हमारा महान है। अपना फर्ज निभाओ, संघ कहे - हम इसकी शान हैं।"

कार्यक्रम की शुरुआत में क्रमशः समणीवृंद, साध्वीवृंद एवं मुनिवृंद ने पृथक-पृथक गीत के माध्यम से संघ, संघ पति एवं गण की मर्यादाओं के प्रति निष्ठा को व्यक्त करती प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंतिम चरण में संघगान के साथ पूज्यवर ने त्रि-दिवसीय मर्यादा महोत्सव के समापन की घोषणा की।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी ने महत्ती कृपा कर 161वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर निम्न लिखित मुमुक्ष भाई-बहनों को दिनांक 3 सितम्बर 2025, बुधवार, भाद्रपद शुक्ला एकादशी को प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा, अहमदाबाद में दीक्षा प्रदान करने की घोषणा करवाई :-

मुनि दीक्षा
मुमुक्षु कल्प मेहता
मुमुक्षु प्रीत कोठारी
मुमुक्षु मोहक बेताला

साध्वी दीक्षा
मुमुक्षु मनीषा, मुमुक्षु प्रेक्षा
मुमुक्षु राजुल, मुमुक्षु भावना
मुमुक्षु कीर्ति

समणी दीक्षा
मुमुक्षु भाविका, मुमुक्षु बिनु
मुमुक्षु अंजली, मुमुक्षु साधना

साथ ही मुमुक्षु मनोज संकलेचा (सूरत) को साधु प्रतिक्रमण सीखने की स्वीकृति प्रदान की।

मुनि वृंद द्वारा प्रस्तुत गीत

विघ्नविनायक मंगलदायक स्वामीजी का जय नारा।
जैन-जगत की जान, शान है तेरापथ सबसे प्यारा ।।
इसके सिंचन में हैं भिक्षु स्वामी के श्रम की बूंदें।
हाथ जोड़कर, शीष नवांकर, श्रद्धा से आंखें मूंदें ।
महावीर का पथ-दिखलाता, बाबा तू ही रखवाला।
सुप्त कुंडली जागृत करदे, भरदे पौरुष की ज्वाला।।

मर्यादा का मूल्य बढ़ाया, जयाचार्य है जयकारी।
प्रबल शक्तिधर कवच बनाया, बाबे का ही अवतारी।।
कहता मोछब सुनो सभी जन, मैं जब-जब भी आता हूँ।
विनय समर्पण रीति-नीति भावों को और दृढ़ाता हूँ।।
जिन शासन का विनय मूल है, उसका ही सब खेला है।
मर्यादोत्सव तेरापथ का, महाकुम्भ का मेला है।।

मठों मंदिरों का नहीं झगडा, ना झगड़ा कोई चेलों का।
पुस्तक-पन्ने-पदवी का नहीं, झगड़ा ना कोई महलों का।।
चेले देदू-गुरु बना दू-क्षेत्रों का पट्टा।
उपाध्याय पद-और कोई पदवी-अरे कुछ तो लेलो।।
एक गुरु की आण है और एक विधान है।
संघ- संघपति के चरणों में, आजीवन कुर्बान है।।
किसको कहां करना है मोछब चौमासा या यात्राएं।
उसी दिशा में चरण बढ़ाएं, जहां गुरुजी फरमाए।।
गुरु की दृष्टि सुख की सृष्टि और किसी से क्या लेना।
गण का, गुरु का, निज आत्मा का हमको आराधक होना।।

जिस पन्ने पर लिखा भिक्षु ने क्या कागज का टुकड़ा है?
टुकड़ा नहीं कहना उसको हरता जन्मों का दुखड़ा है।।
तेरापथ है महागीत तो अनुशासन ही मुखड़ा है।
अनुशासित होने पर भोला रहता उखड़ा-उखड़ा है।।
झुकना जिसको नहीं सुहाता विनम्रता नहीं आती है।
आभ्यन्तर चक्षु नहीं उसके पूरा खर का साथी है।।

भिक्षु भारमल रायचंद जय मघवा माणक श्री डालगणी को।
कालु तुलसी गुरुवर को-खमाघणी।।
जय महाप्रज्ञ गुरुवर को-खमाघणी।
इस शासन के पुण्य प्रतापी जब्बर-बब्बर राणा है।।
वर्तमान में चार तीर्थ का महाश्रमण महाराणा है।
देख इशारा महाश्रमण का हम जम्मू भी जाएंगे।।
पास पड़ोसी के कश्मीरी को भी ध्यान कराएंगे।
माना तुम हो सिंधु बड़े हम तो केवल इक बिंदु हैं।।
किंतु बिंदु के हृदय कटोरे में भी बैठा सिंधु है।
हम शासन के सुभट सज्ज हैं, धर्मध्वज हाथों लेकर।।
हर सपना पूरा कर देंगें, देकर तो देखो गुरुवर।।

दुनिया दीवानी है, महाश्रमण भगवान।
तेरी पुनवानी है, मिलें हमें वरदान।।
आत्मवान, ज्ञानवान, वेदवान, धर्मवान, ब्रह्मवान हों शासन में।
विनयवान बनकर रहना हमको तेरे अनुशासन में।
इंगित पहचान, बन जाए गतिमान और पाएं अविचल स्थान।।

सबसे पहले इस भूमि पर रायऋषि जी आए।
तीन बार आकर मुनि डालिम कच्छीपूज कहाए।।
दीक्षा मोत्सव देकर तुलसी ने करुणा बरसाई।
महाश्रमण ने सबसे ज्यादा अब तक कृपा कराई।।
भुज भाग्योदय, कच्छ की यह लय, अब चौमासा फरमान।।

लय– राम जागो चीनी भागो

साध्वी वृंद द्वारा प्रस्तुत गीत

भिक्षु का आसन भिक्षु का शासन सारे जहां में निराला,
मर्यादाओं से रोशन है गणवन भरता है मन में उजाला।
गण से जुड़ी है जीवन की आशा,
आशा के दीप जलाते चले।
चाहे धूप खिले चाहे सांझ ढले गण का है सबल सहारा।
आबाद रहे निर्बाध रहे गण आठों प्रहर रखवारऽऽऽ।।

1.गुरु के इंगित पे चलते रहेंगे,
आए संकट भले ही सहेंगे।
शिष्यों की योग्यता ही दीक्षा की है कसौटी,
रहती यहाँ पे गुरु के हाथों में सबकी चोटी।
गण ये प्राणवान है सबमें शक्ति भरता है,
भव से हमारी नैया जो पार करता है।।

2. भैक्षव शासन की नींवें हैं गहरी,
गण के नायक सुरक्षा-प्रहरी।
पहुंची है आसमां में गणकीर्ति की ध्वजाएं,
परमार्थ-पथ पे चलके निज भाग्य को सजाएं।
प्रासाद संघ का अति सुरम्य लगता है,
प्रेरणा से जीवन में जोश जगता है।।

3. गुरुवर वृद्धों की सेवा कराते,
ग्लानों-रुग्णों को साता दिराते।
सेवा हमारे गण की पहचान है अनूठी,
मिलती यहां पे सबको सेवा की जन्मघूंटी।
गण वर्धमान हो दायित्व ये अपना है,
इस संघ के खातिर हमें खपना है।।

4. विभुवर सूरत से सौराष्ट्र आए,
कच्छ भुज में महोत्सव मनाएं।
भुज शहर पर टिकी है दुनियां की आज नजरें,
उल्लास है दिलों में सागर में जैसे लहरें।
गण के 'विधान' का सम्मान हम करते हैं,
संघ की इस धूलि को निज शीश पर धरते हैं।।

लय– तेरा हिमालय आकाश छूले

❖ **दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं– मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।**
– आचार्य श्री महाश्रमण

समणश्रेणी द्वारा प्रस्तुत गीत

लय– कैलाश के निवासी नमूं

ये संघ है सुमेरु, हम प्रदक्षिणा करें-2,
तीर्थों में तीर्थराज की, परिक्रमा करें-2...

1. तीर्थंकरों के स्पर्श से पावन सुमेरु है-2,
तीर्थंकरों की वाणी से ये संघ-मेरु है-2
श्रुत शील से संपन्न गुरु की वंदना करें, अभिवंदना करें,
तीर्थों में तीर्थराज की, परिक्रमा करें-2...

2. धरा का नाभिचक्र वो देवों का बसेरा-2,
आश्रय सुहाना साधना का पंथ ये तेरा-2,
रमते मुनि निज धर्म में, संदर्शना करें, अभिवंदना करें,
तीर्थों में तीर्थराज की, परिक्रमा करें-2...

3. सद्ज्ञान दर्शन तप चरण चारों ही उपवन में-2,
तेरह नियम के फूल खिलते सारी ऋतुओं में-2
ऐसा है तेरापंथ, ले शरण वो तरे, अभिवंदना करें,
तीर्थों में तीर्थराज की, परिक्रमा करें-2...

लय– रुढ़ियों को तोड़ दो

दोनों हाथ जोड़ लें, विवेकशक्ति तोल लें,
जिससे संघ का भला न हो, वो काम क्यों करें?

4. संघ की पुनीत रीति नीति की जो बात है,
पीढ़ियों से आ रही जो गुनगुनाती ख्यात है।
आचमन करलें उन्हीं संस्कारों की गंगधार का,
निष्ठा में रखना पिरोकर शान से गलहार सा, आऽऽऽ
जिंदगी के सार की फुहार काहे छोड़ दें,
जिससे आत्म का भला न हो, वो राह क्यों चलें?

5. कामना है गर यही, भिक्षु का गण अक्षुण्ण हो,
पंच मर्यादाओं से साधक सदा परिपूर्ण हो,
संघ में आए हैं इसमें ही रहेंगे मान से,
और प्रण रहेगा ये, इस वर्ष प्रेक्षाध्यान से, आऽऽऽ
एक ही हो कार्य अपनी चेतना टटोल लें,
जो गुरु को नापसन्द हो, वो काम क्यों करें?

लय– कैलाश के निवासी नमूं

ये संघ है सुमेरु, हम प्रदक्षिणा करें-2,
तीर्थों में तीर्थराज की, परिक्रमा करें-...

6. आह्वान है समय का, गुरुवाणी ध्यान दो,
कच्छ की भूमि रणी संतान दान दो,
भुज की भुजाओं से रणी संतान दान दो,
आह्वान है समय का, गुरुवाणी ध्यान दो,
गुजरात के श्रावक गुणी संतान दान दो,
कर वर्द्धमान संपदा सौभाग्य को भरें,
तीर्थों में तीर्थराज की, परिक्रमा करें-2...

ये संघ है सुमेरु, हम प्रदक्षिणा करें-2,
तीर्थों में तीर्थराज की, परिक्रमा करें.-2...

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
10 फरवरी - 16 फरवरी, 2025

आज्ञा, मर्यादा, आचार्य, गण और धर्म के प्रति समर्पण है आवश्यक : आचार्य श्री महाश्रमण

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के पदारोहण दिवस पर उनके पट्टधर ने की सादर श्रद्धा समर्पित

स्मृतिवन-भुज।
3 फ़रवरी, 2025

त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव का दूसरा दिन। आचार्य भिक्षु एवं मर्यादा पुरुषोत्तम जयाचार्य के परम्पर-पट्टधर, आचार्यश्री महाश्रमणजी ने संपूर्ण धर्मसंघ को मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज्ञा, मर्यादा, आचार्य, गण और धर्म— इन पाँच तत्वों में ही मर्यादा महोत्सव, साधुता और संगठन की सफलता समाहित है।

आज्ञा देने में समर्थ कौन?

आज्ञा के प्रति समर्पण का भाव सफलता का महत्वपूर्ण सूत्र है। आज्ञा देने वाला भी कोई समर्थ व्यक्ति होना चाहिए, जिसकी आज्ञा से पालक का हित हो सके। जिनेश्वर भगवान की आज्ञा सर्वोपरि होती है। वर्तमान में तीर्थंकर भगवान साक्षात रूप से नहीं हैं, लेकिन उनकी आज्ञा जिनवाणी के रूप में शास्त्रों-आगमों में संग्रहीत है। हमारी परंपरा में 32 आगम प्रमाणस्वरूप प्रतिष्ठित हैं, जिनमें भी 11 अंग स्वतः प्रमाण हैं। आगम हमारे श्रद्धा और सम्मान के केंद्र हैं। हमें करणीय और अकरणीय का विचार करना चाहिए। वर्तमान में तीर्थंकर तो नहीं हैं, लेकिन उनके प्रतिनिधि के रूप में आचार्य प्रतिष्ठित हैं। हमारे धर्मसंघ में आचार्य की आज्ञा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। साधु-साध्वियों को ऐसा त्याग भी दिलाया जाता है कि 'आचार्य की आज्ञा को लांघने का त्याग है।'

जब तक आचार्य विराजमान हैं, तब तक युवाचार्य को भी उनकी आज्ञा का पालन करना होता है। श्रीमद जयाचार्य ने 'गणपति सिखावण' में युवाचार्य को आचार्य की आज्ञा पालन और सेवा करने की शिक्षा दी है। युवाचार्य को आचार्य की दूसरी देह माना जाता है। आचार्य युवाचार्य को उपालंभ भी दे सकते हैं। इससे युवाचार्य को उलाहना देने का प्रशिक्षण भी प्राप्त हो सकता है और अन्य को जागरूक रहने का अवसर मिल सकता है।

पूज्य प्रवर ने प्रेरणा देते हुए कहा –

काच कठीर अधीर नर, कस्या न उपजै प्रेम।
कसणी तो धीरा सहै, के हीरा के हेम।।

आचार्य की कड़ी दृष्टि को भी सहन करने का प्रयास करना चाहिए। सहन करने में हीरे के समान कठोर बनना चाहिए न कि कांच की भांति अधीर। गुरुओं की कठोर वाणी को सहन करने वाला ऊंचाई को प्राप्त कर सकता है। जो मणि निकष पर खरे नहीं उतरते हैं उन्हें राजा के मुकुट में स्थान नहीं मिलता। अपने अग्रणी की आज्ञा पर भी ध्यान देने का प्रयास करना चाहिए। अग्रणी साधु-साध्वी आचार्य के प्रतिनिधि होते हैं, इसलिए उनकी आज्ञा आदि का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने आचार्य श्री रायचंद जी एवं युवाचार्यश्री जीतमलजी के बीदासर-बीकानेर चातुर्मास के प्रसंग का वर्णन करते हुए प्रेरणा दी - आचार्य की आज्ञा में गली निकलना स्वीकार नहीं है। यदि युवाचार्य आचार्य की आज्ञा का अक्षरशः पालन करते हैं तो संत शब्दशः तो पालन करेंगे। आज्ञा की आराधना सफलता का एक सूत्र है।

मेरं सम्मं पालइस्सामि

मर्यादा के प्रति निष्ठा, जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। यदि हम मर्यादा का सम्मान करेंगे तो मर्यादा भी हमारा सम्मान करेगी। सामान्यतया आचार्य अपना उत्तराधिकारी निर्णीत करते हैं, उत्तराधिकारी के बाद का उत्तराधिकारी नहीं बनाते। आगे का चिंतन दे सकते हैं पर आधिकारिक कार्य तो वर्तमान आचार्य ही कर सकते हैं। हमारे धर्मसंघ की अपनी मर्यादाएं हैं, जिनका सभी को सम्यक पालन करना चाहिए।

आयरियं सम्मं आराहइस्सामि

आचार्य की आज्ञा की सम्यक आराधना तो करनी ही होती है, आचार्य के इंगित, दृष्टि और अभिप्राय को भी समझने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य के प्रति विनयपूर्ण व्यवहार रखना चाहिए। साधु अप्रमत रहकर आचार्य की आराधना का प्रयास करे। आचार्य प्रवर ने आचार्य भिक्षु और मुनि श्री खेतसीजी के उदाहरण से उनकी सेवा निष्ठा का वर्णन किया।

गणं सम्मं अनुगमिस्सामि

गण की आराधना, सेवा और अनुगमन करना आवश्यक है। संघ के विपरीत शब्द भी नहीं आने चाहिए कोई भी परिस्थिति आ जाए, आवेश में आकर गण को नहीं छोड़ना चाहिए। जीना और मरना दोनों संघ में ही हो। आचार या सिद्धांत की बात हो तो आचार्य को निवेदन करना चाहिए, पर संघ छोड़ने की बात नहीं करनी चाहिए। हमारा यह संकल्प रहे - 'छूटे तो यह तन छूटे, शासन संबंध न टूटे।'

धम्मं न कयावि जहिस्सामि

धर्म कभी नहीं छोड़ना चाहिए। अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म की साधना में दृढ़ रहना आवश्यक है। अर्हन्नक जैसी दृढ़ता हम चारित्रात्माएं भी मन में रखें। संघ से भी बड़ा धर्म है। 'प्राण जाए पर साधना का प्रण न जाए'— इस भावना के साथ धर्म के पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। साधुता मेरा धर्म है, और यह धर्म नहीं छूटना चाहिए।

आचार्य महाप्रज्ञजी का पदारोहण दिवस

पूज्यवर ने आगे फ़रमाया कि आज माघ शुक्ला षष्ठी है, जो आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का पदारोहण दिवस है। गुरुदेव तुलसी ने दिल्ली में इस दिन उनका पदाभिषेक किया था। तेरापंथ का आचार्य बनना विशेष सौभाग्य की बात होती है। ऐसा अवसर इस धर्मसंघ में एक ही बार आया कि अपने गुरु और आचार्य के रहते हुए ही किसी युवाचार्य ने आचार्य पद प्राप्त किया हो। उनका आयुष्य और संयम पर्याय लंबा रहा। मुझे 13 वर्षों तक आचार्य महाप्रज्ञजी के चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके निर्देशन में आगम संपादन कार्य में योगदान देने का अवसर मिला। उन्होंने प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का आविष्कार किया। उनका संयम जीवन अत्यंत विलक्षण था। मैं आचार्य महाप्रज्ञजी के प्रति श्रद्धा अर्पित करता हूँ।

अनुशासन और सामुदायिक चेतना का निर्माण करता है मर्यादा महोत्सव

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि परम पूज्य आचार्य भिक्षु जैसे महान संत यदा-कदा ही जन्म लेते हैं। उन्होंने न केवल मर्यादाओं का निर्माण किया अपितु साधु-साध्वियों को उनके प्रति निष्ठावान बनाया। गौरव की बात यह है कि आज तक उनके द्वारा बनाई गयी मर्यादाओं में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस नहीं हुयी। आचार्य भिक्षु ने शिष्यादिक ममत्व के परिहार के लिए, संयम की विशुद्धि के लिए, अनुशासन और न्याय मार्ग पर सभी चलें इसलिए मर्यादाएं निर्मित की। हमारे चतुर्थ आचार्य श्रीमद जयाचार्य की दूरदर्शिता का परिणाम है कि मर्यादा महोत्सव हमें मर्यादाओं के प्रति निष्ठा रखने की प्रेरणा देता है, हमारे भीतर अनुशासन की चेतना और सामुदायिक चेतना का निर्माण करता है। मुख्य मुनिप्रवर ने गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा रचित पंचसूत्रम के सूत्रों - अनुशासन सूत्र, व्यवस्था सूत्र, चर्या सूत्र, आलंबन सूत्र और शांत सहवास सूत्र की व्याख्या की। मुख्यमुनिश्री ने आगे कहा - अतीत के आचार्यों और मर्यादाओं का पालन करने वाले साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं का भी धर्मसंघ की प्रगति में महनीय योगदान है। वर्तमान में हम आचार्यश्री महाश्रमणजी की छत्र छाया में धर्म संघ निश्चिन्त होकर निरंतर प्रगति के सोपानों क पर आरोहण करता जा रहा है। आप एक पारस पत्थर के समान हैं, आपका आभामंडल पवित्र और तेजस्वी है। हर व्यक्ति आपके सान्निध्य में आकर आध्यात्मिक चेतना का अनुभव करता है।

मंगल प्रवचन के पूर्व मुमुक्षु बहनों ने गीत का संगान किया एवं प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कीर्तिभाई संघवी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ समाज भुज-कच्छ ने संयुक्त रूप में गीत का संगान किया। भुज से संबद्ध मुनि अनंतकुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। भुज ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा 'शासनश्री साध्वी अशोकश्री पावन पथगामिनी' पुस्तक आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित की गई। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

संस्था शिरोमणि तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष रमेश डागा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष हिम्मत माण्डोत, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रताप दुगड़, विकास परिषद के सदस्य पदमचन्द पटावरी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आगामी मर्यादा महोत्सव क्षेत्र छोटी खाटू के तेरापंथ समाज ने गीत की प्रस्तुति दी। चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-अहमदाबाद के सदस्यों ने भी गीत की प्रस्तुति दी। अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति-डीसा की ओर से रतनलाल मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए।

मंगल भावना कार्यक्रम

हासन।

साध्वी संयमलता जी ठाणा 4 का मंगल भावना कार्यक्रम स्थानीय भवन में रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल, हासन की बहनों की मंगल भावना गीतिका से हुई। साध्वी रौनकश्री जी ने हासन को साताकारी क्षेत्र बताते हुए कहा कि भवन अच्छा है तो गतिविधि भी होती रहनी चाहिए। भवन में गतिविधियां हो तो सभी को आकर सामायिक करनी चाहिए। नियमित कार्यक्रम करें ताकि भवन और श्रावक खिले रहें। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि हमारे आने के साथ साल का समापन हुआ और नए साल की शुरुआत भी। यहाँ पूरे साल साधु-संतों का आवागमन होता रहे तो ऊर्जा बनी रहेगी। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि मंगल भावना पर विदाई की जगह बधाई दी जानी चाहिए। संक्रान्ति का मतलब है परिवर्तन और परिवर्तन संसार का नियम है, क्योंकि हम कोई भी अच्छा कार्य करते हैं तो बधाई देते हैं, आगमन से जो धर्म आराधना हुई है तो इसकी बधाई देते हुए इसकी खुशी मनानी चाहिए। साध्वीश्री ने कहा कि हम जो अच्छा कार्य करता है उसे अप्रिशिएट करते हैं। किसी को अप्रिशिएट करना और तारीफ करना दो अलग-अलग बातें हैं। प्रोत्साहित करने से मनुष्य में आगे बढ़ने की इच्छा जागृत रहती है, और तारीफ करने से उसका विकास रुक जाता है, इस क्षेत्र के लोग सहयोगी हैं। भवन मे शनिवार की सामायिक करें, धम्म जागरण करें तो भवन ऊर्जावान रहेगा। साध्वीश्री ने सभी श्रावकों से खमतखामणा किया। इससे पहले हासन तेरापंथ महिल मंडल मंत्री पिंकी गुलगुलिया, मलनाड अध्यक्ष महावीर भंसाली, हासन तेरापंथ सभा अध्यक्ष सोहनलाल तातेड, अणुव्रत समिति अध्यक्ष चांदमल सुराणा, पूर्व अध्यक्ष डॉ जयंतीलाल कोठारी, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष नितेश सुराणा, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका ममता कोठारी, हेमराज आशोरिया ने अपने-अपने विचार रखते हुए सभी साध्वियों से खमतखामणा किया। कार्यक्रम के अंत में गुरुदेव की रास्ते की सेवा कर आए बच्चों एवं बेंगलुरु में हुए शिविर में भाग लेने वाले बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया। सभा मंत्री विमल कोठारी ने आभार ज्ञापन किया। समापन साध्वीश्री के मंगल पाठ के साथ हुआ।

संक्षिप्त खबर

'प्रेक्षा प्रवाह - शांति और शक्ति की ओर' कार्यशाला का आयोजन

नवरंगपुर। अभातेमम के निर्देशानुसार दीनदयाल कन्या आश्रम में 'प्रेक्षा प्रवाह - शांति और शक्ति की ओर' कार्यशाला का आयोजन सुभाष जैन की विशेष उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। अध्यक्ष बॉबी जैन ने सबका स्वागत किया और प्रेक्षा वर्ष के बारे में बताया। सुभाष जैन ने प्रेक्षाध्यान एवं कायोत्सर्ग के बारे में जानकारी देते हुए सही श्वास की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जिसका श्वास लंबा होता है वह अधिक उम्र तक जीवित रह सकता है। मंडल द्वारा आश्रम के बच्चों को आवश्यक सामग्री का वितरण भी किया गया। मंत्री रीना जैन ने आभार व्यक्त किया।

उड़ान कार्यशाला का आयोजन

गुवाहाटी। अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, गुवाहाटी द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत 'उड़ान - सुनहरा भविष्य - एक कदम स्वावलंबन की ओर' के दूसरे चरण में आरती की थाली एवं विविध प्रकार के डेकोरेटिव हैंपर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत से हुई। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आशा करते हैं यह प्रशिक्षण क्लास कन्याओं और बहनों को उनके सुनहरे भविष्य की ओर ले जाने में सहायक बनेगी। इसमें लगभग 70 बहनों की सहभागिता रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री ममता दुगड़ ने किया। गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड धारी आर्टिस्ट चंचल राठी ने सरल भाषा व सुंदर तरीके से आरती की थाली व हैंपर बनाना सिखाया। कार्यक्रम संयोजिका उषा सुराणा एवं रंजना भंसाली ने सभी का आभार व्यक्त किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

पाणिग्रहण संस्कार

■ **बेंगलुरु।** स्वर्गीय पद्माबाई - महेंद्र धनेचा बोहरा (झूठा रायपुर निवासी - बेंगलुरु प्रवासी) की पुत्री भावना जैन एवं राजकंवर-राजेश कुमार ढेलरिया (खेरवा निवासी-बेंगलुरु प्रवासी) के पुत्र अमित का शुभ विवाह जैन संस्कार विधि से गणेशबाग, बेंगलुरू में परिषद् से संस्कारक आदित्य मांडोत ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **बेंगलुरु।** बेंगलुरु प्रवासी पंकज मेहता के Madlabs प्रतिष्ठान का बेंगलुरु के Snow City में शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। संस्कार विधि का संचालन संस्कारक आदित्य मांडोत, अमित भंडारी और चंद्रप्रकाश मेहता ने निर्दिष्ट मंत्रों के उच्चारण के साथ किया।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

बेंगलुरु।

76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) बेंगलुरु वेस्ट शाखा ने तेयुप बेंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर, राजाजीनगर में BBMP कार्मिकों के लिए एक निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत TPF टीम द्वारा मंगलाचरण के साथ हुई। शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे- दिनेश गुंडू राव, मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, कर्नाटक सरकार, पुट्टन्ना, एमएलसी, बेंगलुरु टीचर्स कॉन्स्टिट्यूएंसी, पद्मावती, अध्यक्ष, राज्य महिला विकास निगम और पूर्व मेयर।

विशेष रूप से उपस्थित TPF के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने TPF की गतिविधियों और इसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला। TPF साउथ जोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी ने समुदाय आधारित पहल के महत्व पर जोर दिया। TPF वेस्ट अध्यक्ष ललित बेंगानी ने शाखा द्वारा किए जा रहे कार्यों को रेखांकित किया। कार्यक्रम में विभिन्न पार्षद, पूर्व पार्षद, BBMP ब्लॉक अध्यक्ष और कई सरकारी अधिकारी भी उपस्थित रहे। सभी ने TPF द्वारा समाज के इस महत्वपूर्ण वर्ग के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की। शिविर में 100 से अधिक BBMP कार्मिकों ने विभिन्न स्वास्थ्य परीक्षणों का लाभ उठाया। कार्यक्रम में एटीडीसी राजाजीनगर संयोजक रजत बैद, स्वयंसेवक और सामाजिक कार्यकर्ता साजिल अहमद और विनायक करंथ का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। शिविर के संयोजक तरुण पटावरी और सह-संयोजक त्रिशाल दुगड ने पूरे आयोजन को सफलतापूर्वक प्रबंधित किया, जिनका साथ TPF बेंगलुरु वेस्ट की पूरी टीम ने दिया। कार्यक्रम में TPF बेंगलुरु के पूर्व अध्यक्ष हितेश गिरिया और निर्मल संचेती के साथ-साथ TPF बेंगलुरु सेंट्रल के अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही।

आध्यात्मिक मिलन का भव्य आयोजन

तिरुवन्नामलै, तमिलनाडु।

तमिलनाडु के तिरुवन्नामलै शहर के प्रख्यात रमन महर्षि आश्रम में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी ठाणा-2 और मुनि दीप कुमार जी ठाणा-2 का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

आश्रम में जहां श्रावक समाज इस नयनाभिराम दृश्य का साक्षी बन रहा था वहीं देश-विदेश की जनता भी इस लुभावने दृश्य को देखने को लालायित दिखाई दे रही थी। वहां से प्रस्थान कर चारों मुनिवृंद शहर के महावीर भवन पधारे जहां पर आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा तिरुवन्नामलै आदि संस्थाओं द्वारा किया गया। इस अवसर पर 11 क्षेत्र के लोग उपस्थित थे। मुनि हिमांशु कुमार जी ने कहा - यह संतों का मिलन सबको मिलनसारिता की प्रेरणा देता है। मुनि दीप कुमार जी अच्छे वक्ता भी हैं और अच्छे लेखक भी हैं। जिनमे ये दोनों शक्ति होती है वह शक्तिशाली होता है। इन्होंने मुनि राकेश कुमार जी स्वामी की सेवा कर बहुत सीखा है। मुनि हेमंतकुमार जी बहुत पुरुषार्थी हैं। मुनि काव्य कुमार जी मीठा बोलते हैं। श्रावक समाज भी कितनी सेवा करता है। हम सब संघ प्रभावना करते रहें।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा- हम बहुत सौभाग्यशाली हैं जो हमें तेरापंथ धर्म संघ जैसा अनुशासित संघ प्राप्त हुआ। मुनि हिमांशु कुमार जी स्वामी के दर्शन पर आज बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुनिश्री पुरुषार्थी, ज्ञानी हैं। जहां पधारते हैं संघ प्रभावना करते हैं। मुनि हेमंत कुमार जी भी स्पष्ट वक्ता और कलाकार संत है।

मुनि काव्य कुमार जी ने भी अच्छा विकास किया है। इस मिलन से प्रमोद भाव विकसित होता है। हमारा श्रावक समाज भी बहुत समर्पित है। मुनिश्री ने स्वरचित गीत का भी संगान किया।

मुनि हेमंत कुमार जी, मुनि काव्यकुमार जी ने भी उल्लास भरे उद्गार व्यक्त किये। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा तिरुवन्नामलै के अध्यक्ष अरविंद सेठिया ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हेमंत कुमार जी ने किया।

संबोधि

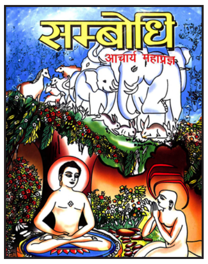

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

भगवान् प्राह

जीवपुद्गलयोगेन, दृश्यं जगदिदं भवेत् ॥

भगवान् ने कहा–वत्स ! यह जगत् जीव और पुद्गल के संयोग से दृश्य बनता है।

३६. आत्मा न दृश्यतामेति, दृश्यो देहस्य चेष्टया।
देहेऽस्मिन् विनिवृत्ते तु, सद्योऽदृश्यत्वमृच्छति॥

आत्मा स्वयं दृश्य नहीं है, वह शरीर की चेष्टा से दृश्य बनता है। शरीर की निवृत्ति होने पर वह तत्काल अदृश्य बन जाता है।

विज्ञान और धर्म में कोई दूरी है तो यह है कि विज्ञान जितना दृश्य को स्वीकार करता है, उतना अदृश्य को नहीं। विज्ञान की दृष्टि है कि जिसका माप हो वही तत्त्व है। धर्म कहता हैं-अमाप्य भी तत्त्व है। आप सब कुछ माप सकते है। किन्तु आत्मा या अमूर्त को नहीं। दृश्य ही सब कुछ नहीं है। यह स्वयं निष्चेष्ट निष्क्रिय है, यदि उसके पीछे अदृश्य का हाथ न हो तो। दृश्य महान् नहीं है। महान् है-अदृश्य, जिसकी सत्ता सर्वत्र काम कर रही है। पांच फुट के इस छोटे शरीर में जो स्वचालित प्रक्रिया हो रही है, यह क्या उस अदृश्य की सूचना नहीं दे रही है? वैज्ञानिक कहते हैं- 'यदि इस शरीर का निर्माण हमें करना पड़े तो कम से कम दस वर्गमील में एक कारखाना बनाना पड़े।' दृश्य शरीर की चेष्टा से अदृश्य का बोध होता है। उसे नकारा नहीं जाता। आज वैज्ञानिक भी उसके निकट पहुंच रहे हैं और उसकी सत्ता को स्वीकार कर रहे हैं। बहुतों ने अपनी खोज के संबंध में कहा है- इस तथ्य का पता हमें किसी अज्ञात जगत् से मिला है। शरीर के सो जाने पर भी चेतना नहीं सोती।

३७. स्पर्शाः रूपाणि गन्धाश्च, रसा येन जिल्हासिताः।
आत्मा तेनैव लब्धोऽस्ति, स भवेदात्मविद् पुमान्॥

जिसने स्पर्श, रूप, गंध और रसों की आसक्ति को छोड़ना चाहा, आत्मा उसी को प्राप्त हुआ है और वही आत्मवित् है।

आत्मा का अनुभव इन्द्रिय विषयों से परे हटने पर होता है। जब तक इन्द्रिय और मन की हलचल होती रहती है तब तक आत्मा सुप्त रहती है। जब आत्मा जागती है तब वे सो जाते हैं। गीता में लिखा है- 'इन्द्रियों के विषय उस शरीर-धारिणी आत्मा से विमुख हो जाते हैं, जो उसका आनंद लेने से दूर रहती है। परंतु उनके प्रति रस (लालसा) फिर भी बना रहता है। जब भगवान् (आत्मा) के दर्शन हो जाते हैं तब वह रस भी जाता रहता है।'

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री चत्रूजी 'बड़ा' (बाजोली) दीक्षा क्रमांक 65

साध्वीश्री को सिद्धान्तों का गहरा ज्ञान था। लगभग 30 सूत्रों का वाचन किया। आप साधु-क्रिया में कुशल, साहसी और निर्भीक थी। प्रश्नों के जवाब देने में बड़ी चतुर थी। आप तपस्विनी भी थी।

आपने उपवास, बेले आदि तप बहुत किये। तीन बार 16 दिन की तपस्या की। प्रत्येक वर्ष 'दस प्रत्याख्यान' किये। बहुत वर्षों तक 5 विगय का परित्याग रखा 30 वर्षों तक सर्दी में एक ही पछेवड़ी ओढी । अन्त में दो मुहूर्त के चौविहार अनशन में समाधि मरण को प्राप्त हुई।

– साभारः शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

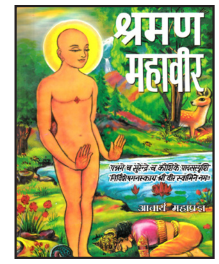

तीर्थ और तीर्थंकर

भगवान् ने प्रत्यक्ष ज्ञान से देखा इन्द्रभूति आदि धुरन्धर विद्वान् यज्ञशाला में उपस्थित हैं। उनकी योग्यता से भगवान् खिंच गए और भगवान् के संकल्प से वे खिंचने लगे।

उद्यानपाल आज एक नया संवाद लेकर राजा के पास पहुंचा। वह बोला, 'महाराज! आज अपने उद्यान में भगवान् महावीर आए हैं।' राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उद्यानपाल ने फिर कहा, 'भगवान् आज बोल रहे हैं। यह सुन राजा को आश्चर्य हुआ।'

'महाराज! मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता, फिर भी कुछ लोगों को मैंने यह चर्चा करते हुए सुना है कि भगवान् आज धर्म का उपदेश देंगे', उद्यानपाल ने कहा।

राजा प्रसन्नता के सागर में तैरने लगा। वह स्वयं महासेन वन में गया और नागरिकों को इसकी सूचना करा दी।

इन्द्रभूति ने देखा-हजारों-हजारों लोग एक ही दिशा में जा रहे हैं। उनके मन में कुतूहल उत्पन्न हुआ। उन्होंने यज्ञशाला के संदेश-वाहक को लोकयात्रा का कारण जानने को भेजा। संदेश वाहक ने आकर बताया, 'आज यहां श्रमणों के नए नेता आए हैं। उनका नाम महावीर है। वे अपनी साधना द्वारा सर्वज्ञ बन गए हैं। आज उनका पहला प्रवचन होने वाला है। इसलिए हजारों-हजारों लोग बड़ी उत्सुकता से वहां जा रहे हैं।'

संदेश-वाहक की बात सुन इन्द्रभूति तिलमिला उठे। उन्होंने मन-ही-मन सोचा-ये श्रमण हमारी यज्ञ-संस्था को पहले से क्षीण करने पर तुले हुए हैं। श्रमण नेता पार्श्व ने हमारी यज्ञ-संस्था को काफी क्षति पहुंचाई हैं। उनके शिष्य आज भी हमें परेशान किए हुए हैं। जनता को इस प्रकार अपनी ओर आकृष्ट करने वाले इस नए नेता का उदय क्या हमारे लिए खतरे की घंटी नहीं है? मुझे इस उगते हुए अंकुर को ही उखाड़ फेंकना चाहिए। यह चिनगारी है। इसे फैलने का अवसर देना समझदारी नहीं होगी। बीमारी का इलाज प्रारम्भ में न हो तो फिर वह असाध्य बन जाती है। अब विलम्ब करना श्रेय नहीं है। मैं वहां जाऊं और श्रमण नेता को पराजित कर वैदिक धर्म में दीक्षित करूं। इसके दो लाभ होंगे-

१. हमारी यज्ञ-संस्था को एक समर्थ व्यक्ति प्राप्त हो जाएगा।

२. हजारों-हजारों लोग श्रमण-धर्म को छोड़ वैदिक धर्म में दीक्षित हो जाएंगे।

इन्द्रभूति ने इस विषय पर गंभीरता से सोचा। अपनी सफलता के मधुर स्वप्न संजोए। शिष्यों को साथ ले, वहां से चलने को तैयार हो गए। इतने में ही उन्हें कुछ लोग वापस आते हुए दिखाई दिए। इन्द्रभूति ने उनसे पूछा-'

आप कहां से आ रहे हैं?'

'भगवान् महावीर के समवसरण से।'

'आप लोगों ने महावीर को देखा? वे कैसे हैं?'

'क्या बताएं, इतना प्रभावशाली व्यक्ति हमने कहीं नहीं देखा। उनके चेहरे पर तप का तेज दमक रहा है।'

'वहां कौन जा सकता है?'

'किसी के लिए कोई प्रतिबन्ध नहीं है।'

'वहां काफी लोग होंगे?'

'हजारों-हजारों की भीड़। पैर रखने को स्थान नहीं। फिर भी जो लोग जाते हैं वे निराश नहीं लौटते।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

नियति और पुरुषार्थ का समन्वय

अनादिपारिणामिक भाव विशुद्ध नियति का क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त आमतौर पर हमारे जीवन-व्यवहार में नियति और पुरुषार्थ दोनों का योग रहता है। किसी एक को एकान्त रूप से ग्रहण नहीं किया जा सकता। जहां तक मैं समझ पाया हूं नियतिवादी को भी पुरुषार्थ का प्रयोग तो करना ही होता है। क्या नियतिवादी क्षुधा शान्ति के लिए हाथ से कवल ग्रहण कर मुंह में नहीं रखता? क्या वह शौचार्थ शौच स्थान पर नहीं जाता है? क्या वह अपने शरीर की सफाई नहीं करता है? क्या नियतिवादी अन्य कार्य नहीं करता है? यदि वह करता है तो इसका अर्थ हुआ कि उसे (नियतिवादी को) पुरुषार्थ का सहारा तो लेना ही पड़ता है। हां, यह ठीक है कि जैसा सर्वज्ञ ने जाना-देखा है, वैसा ही हुआ, होता है और होगा। किन्तु इस तथ्य के आधार पर सर्वथा पुरुषार्थहीन नहीं बना जा सकता।

भगवान ऋषभ ने जान लिया कि उनका पौत्र मरीचि इस अवसर्पिणी काल का, भरत क्षेत्र का अन्तिम तीर्थंकर होगा। जैसा जाना, वैसा ही होना था, वह हो गया, किन्तु भगवान ऋषभ ने यह भी तो जाना होगा कि मरीचि साधनामय पुरुषार्थ करेगा, तीर्थंकर नाम कर्म प्रकृति का बन्धन करेगा तब कहीं तीर्थंकर बनेगा। यदि ऋषभ मरीचि के जीव के इस प्रकार के भावी पुरुषार्थ को नहीं देखते तो मरीचि के तीर्थंकर होने की स्थिति को क्या वे अपने ज्ञान से देख पाते? नियति की पृष्ठभूमि में आमतौर से पुरुषार्थ का योग भी किसी न किसी रूप में रहता ही है। पुरुषार्थ का होना भी एक नियति है, ऐसा तो माना जा सकता है, किन्तु पुरुषार्थ को सर्वथा नकारा नहीं जा सकता।

नियति से जो होना है, वह तो होगा ही। भले ही आदमी नियतिवाद को माने या न माने। नियति हमारे हाथ की चीज नहीं है। हमारे हाथ की चीज पुरुषार्थ हो सकता है। इसलिए आदमी को यथासंभव सत्पुरुषार्थ करना चाहिए। सत्पुरुषार्थ का फल अच्छा ही होता है। इस प्रकार नियतिवाद और पुरुषार्थ वाद-दोनों की आसेवना हो जाती है। नियति से जो होना है, वह तो होता ही है, उसमें कुछ करने की अपेक्षा नहीं। पुरुषार्थ करने से पुरुषार्थ देवता की भी आराधना हो जाता है। इसलिए व्यक्ति पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ to do (टु डू) है, नियति to be (टु बी) है। इसलिए पुरुषार्थी व्यक्ति के जीवन में नियति और पुरुषार्थ दोनों का समन्वय हो सकता है। नियति और पुरुषार्थ की सीमा का अवबोध आवश्यक है। 'नियति' शब्द का प्रयोग मैंने भवितव्यता के अर्थ में किया है और 'पुरुषार्थ' शब्द का प्रयोग प्रयत और पराक्रम के अर्थ में किया है।

पूर्वाभ्यास जिनकल्प साधना का

अध्यात्म साधना के उन्मुक्त विकास के लिए साधु-दीक्षा का स्वीकरण बहुत उपयोगी है। साधु लम्बे समय तक केवल दो ही गुणस्थानों में रहता है, वे हैं-छठा (प्रमत्त संयत) गुणस्थान और तेरहवां (सयोगी केवली) गुणस्थान। तेरहवें गुणस्थान में विद्यमान सभी साधु ज्ञान, दर्शन और चारित्र की दृष्टि से समान होते हैं, उनमें कोई तारतम्य नहीं होता। एक तीर्थंकर और एक सामान्य केवली इस दृष्टि से एक समान हैं। किन्तु छठे गुणस्थान में विद्यमान साधुओं में निर्मलता की दृष्टि से बड़ा तारतम्य होता है। अतिमुक्तक जैसा चंचल कुमारश्रमण पानी में पात्र को प्रवाहित कर क्रीडारत हो जाने वाला मुनि भी छठे गुणस्थान में हो सकता है और गजसुकुमाल जैसा बारहवीं भिक्षु प्रतिमा की कठोर साधना में स्थित मुनि भी छठे गुणस्थान में हो सकता है। पुलाक निर्ग्रंथ भी, जो दोषों का सेवन कर लेता है, छठे गुणस्थान में और छद्मस्थ तीर्थंकर भगवान महावीर भी छठे गुणस्थान में। इन उदाहरणों से छठे गुणस्थान की व्यापकता और अन्तर्निहित तरतमता स्पष्ट हो जाती है।

प्राचीनकाल में साधना के विभिन्न आयाम थे जिनके माध्यम से साधु साधना की गहराई में बैठते थे। वर्तमान समय में आमतौर से पहले की अपेक्षा ज्ञान, दर्शन और चारित्र का ह्रास हुआ है, शारीरिक बल और धृति का भी ह्रास हुआ है। फिर भी आज के युग में भी बहुत कुछ किया जा सकता है, अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है, पूर्णता न भी मिले तो पूर्णता का सामीप्य तो साधा ही जा सकता है। अपेक्षा है कि छठे गुणस्थान में ठहराव न आए और अनपेक्षित निराशा न आए। प्राचीन काल में (भगवान महावीर के बाद तक) साधना का एक प्रयोग था 'जिनकल्प'। यह अपने आप में एक कठोरतम साधना थी। इसके लिए हर कोई मुनि पात्र नहीं होता था, विशेष योग्यता सम्पन्न मुनि ही इसे स्वीकार कर सकता था। स्वीकार करने से पूर्व अपने आपको उसके अनुरूप ढालना पड़ता था, उसके लिए पूर्वाभ्यास करना होता था। उस पूर्वाभ्यास को जानने मात्र से जिनकल्प की महत्ता अनुमानित हो जाती है। वृहत्कल्प भाष्य में उसका वर्णन प्राप्त है। जिनकल्प को स्वीकार करने वाले भिक्षु के लिए पांच भावनाएं बतलाई गई हैं-तप भावना, सत्त्व भावना, सूत्र भावना, एकत्व भावना और बल भावना।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

फरवरी 2025
सप्ताह के विशेष दिन

18 फरवरी
भगवान सुपार्श्वनाथ केवलज्ञान कल्याणक

20 फरवरी
भगवान सुपार्श्वनाथ निर्वाण, भगवान चन्द्रप्रभु केवलज्ञान कल्याणक

22 फरवरी
भगवान सुविधिनाथ च्यवन कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री मघराजजी युग

मुनिश्री सुखलालजी (चाणोद) दीक्षा क्रमांक 290

मुनिश्री बड़े त्यागी, विरागी एवं तपस्वी हुए। उन्होंने 1943 से आजीवन सेलडी (जिसमें गुड़, चीनी मिली हो) की वस्तु का त्याग कर दिया। तप की भी विशेष भावना रखते। उनके तप की जानकारी इस प्रकार है- उपवास/45, 2/8, 3/6, 4/1, 5/2, 15/2, 16/2, 28/2, 30/1 मुनिश्री ने अधिकांश तपस्या चौविहार की।

– साभार: शासन समुद्र –

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा सन् 2025 हेतु घोषित चातुर्मास - विहार

मुनि उदितकुमारजी	शाहदरा, दिल्ली
मुनि अभिजितकुमारजी	अणुव्रत भवन, दिल्ली
साध्वी कनकश्रीजी 'लाडनूं'	अणुविभा भवन, जयपुर
साध्वी शशिरेखाजी	उदासर
साध्वी संयमश्रीजी	रतनगढ़
साध्वी सरोजकुमारी	सरदारशहर की ओर विहार
साध्वी प्रज्ञावतीजी	तारानगर की ओर विहार
साध्वी मंगलप्रभाजी	चुरु
साध्वी ललितकलाजी	लूणकरणसर
साध्वी सुदर्शनाश्रीजी	नोहर की ओर विहार
साध्वी प्रमिलाकुमारीजी	आडसर-मोमासर की ओर
मुनि विनोदकुमारजी	सूरतगढ़ - पीलीबंगा की ओर
मुनि सुमतिकुमारजी	श्रीगंगानगर
साध्वी कुंदनप्रभाजी	अमरनगर, जोधपुर
साध्वी सत्यप्रभाजी	जोधपुर शहर
साध्वी सत्यवतीजी	सरदारपुरा, जोधपुर साध्वी
साध्वी अणिमाश्रीजी	बालोतरा
साध्वी जिनरेखाजी	बायतु
साध्वी मधुस्मिताजी	मारवाड, पाली की ओर
साध्वी काव्यलताजी	मारवाड, पाली की ओर
साध्वी कीर्तिलताजी	ब्यावर
साध्वी प्रमोदश्रीजी	अजमेर की ओर
साध्वी पीयूषप्रभाजी	उदयपुर की ओर
साध्वी रचनाश्रीजी	नाथद्वारा
साध्वी उज्जवलप्रभाजी	राजसमंद
मुनि संजयकुमारजी	रेलमगरा
मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी	केलवा
मुनि सुरेशकुमारजी	कांकरोली
साध्वी सम्यकप्रभाजी	आमेट
मुनि विमलकुमारजी	फरीदाबाद
मुनि रणजीतकुमारजी	कटला रामलीला, हिसार
साध्वी लब्धिप्रभाजी	रोहिणी, दिल्ली
साध्वी प्रशमरतिजी	आर्यनगर की ओर
साध्वी चरितार्थप्रभाजी	पंजाब की ओर
साध्वी प्रांजलप्रभाजी	पंजाब की ओर
साध्वी कनकरेखाजी	धुरी की ओर
साध्वी समन्वयप्रभाजी	मंडी गोविंदगढ़
साध्वी कुन्थुश्रीजी	बीकानेर
साध्वी प्रतिभाश्रीजी	नाभा, पंजाब
मुनि सुधाकरजी	पंजाब की ओर
साध्वी स्वर्णरेखाजी	ग्वालियर
साध्वी मंगलप्रज्ञाजी	तेरापंथ भवन, सिटी लाइट, सूरत
साध्वी मधुबालाजी	उधना
साध्वी राकेशकुमारीजी	नवसारी, सूरत की ओर
साध्वी शिवमालाजी	कालबादेवी, मुंबई
साध्वी कंचनप्रभाजी	घाटकोपर, मुंबई की ओर
मुनि आलोककुमारजी	साक्री, खानदेश
मुनि अर्हतकुमारजी	मध्यप्रदेश की ओर
साध्वी पंकजश्रीजी	पेटलावद, मालवा
साध्वी प्रबलयशाजी	मालवा में रहे
मुनि जिनेशकुमारजी	पूर्वांचल, कोलकता
मुनि प्रशांतकुमारजी	सिलचर
मुनि ज्ञानेंद्रकुमारजी	गुवाहाटी
मुनि आनंदकुमारजी	तेजपुर
मुनि रमेशकुमारजी	धुबड़ी
साध्वी संयमलताजी	विजयनगर, बेंगलोर
साध्वी सोमयशाजी	बेंगलोर
साध्वी पुण्ययशाजी	राजाराजेश्वरी नगर, बेंगलोर
साध्वी पावनप्रभाजी	के. जी. एफ.
साध्वी सिद्धप्रभाजी	मैसूर
मुनि पुलकितकुमारजी	गाँधीनगर, बेंगलोर
मुनि विनीतकुमार जी	हुबली
मुनि आकाशकुमारजी	गंगावती
मुनि मोहजीतकुमारजी	किलपाक, चेन्नई
साध्वी उदितयशाजी	साहुकारपेट, चेन्नई
मुनि दीपकुमारजी	पल्लावरम, चेन्नई
मुनि रश्मिकुमारजी	गुडियातम
मुनि हिमांशुकुमारजी	मदुरै
साध्वी गवेषणाश्रीजी	सिकंदराबाद
साध्वी कमलप्रभाजी 'बोरज'	छोटी खाटू
साध्वी उर्मिलाकुमारीजी	भीलवाड़ा
साध्वी मधुरेखाजी	बोरावड़
मुनि तत्वरुचिजी	भिक्षु साधना केंद्र, श्याम नगर, जयपुर

समणी वृंद हेतु निर्देश

समणी चैतन्यप्रज्ञाजी	ओरलेंडो, अमेरिका
समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी	मियामी, अमेरिका
समणी मलयप्रज्ञाजी	लंदन
समणी समत्वप्रज्ञाजी	न्यू जर्सी
समणी आर्जवप्रज्ञाजी	ह्यूस्टन
समणी भावितप्रज्ञाजी	किशनगंज उपकेन्द्र
समणी निर्वाणप्रज्ञाजी	कटक, उड़ीसा
समणी ज्योतिप्रज्ञाजी	बलांगीर, प.उड़ीसा
समणी कमलप्रज्ञाजी	रायपुर
समणी जिनप्रज्ञाजी	सिलीगुड़ी
समणी संचितप्रज्ञाजी	डीसा
समणी विपुलप्रज्ञाजी	काठमांडू

नमस्कार महामंत्र आध्यात्मिक जप अनुष्ठान का आयोजन

लाडनूं। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आशीर्वाद से जैन विश्व भारती, लाडनूं में मुनि रणजीतकुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र आध्यात्मिक जप अनुष्ठान का कार्यक्रम जैन विश्व भारती और श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, लाडनूं के संयुक्त तत्वावधान में सानंद संपन्न हुआ। सैंकड़ों लोगों ने एक साथ एक लय में नमस्कार महामंत्र का सवा लाख जप किया तो पूरा जैन विश्व भारती परिसर नमस्कार महामंत्र के परमाणुओं से अनुगुंजित हो गया। तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एवं अणुव्रत समिति, लाडनूं का पूर्ण सहयोग रहा। अभातेयुप के जेटीएन फेसबुक पेज पर लाइव प्रसारित हुए इस आयोजन से हजारों व्यक्तियों ने जुड़कर नमस्कार महामंत्र के प्रति अपनी आस्था की अभिव्यक्ति दी। समण संस्कृति संकाय के यूट्यूब पेज पर भी सैकड़ों लोग इस कार्यक्रम के साथ जुड़े। इस अनुष्ठान में दिगम्बर जैन समुदाय से और निकटवर्ती क्षेत्रों से भाई-बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही। धन्यवाद ज्ञापन सभा के उपाध्यक्ष राजेंद्र खटेड़ ने दिया।

साध्वियों का मंगल प्रवेश

हासन। आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी उदितयशा जी ठाणा 4 का मंगल प्रवेश तेरापंथ सभा भवन हासन में हुआ। वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि पंडित वो है जो क्षण को जानता है और उस अवसर का लाभ उठाता है। साध्वीश्री ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि चारित्र आत्माओं का सान्निध्य जब प्राप्त होता है तो समाज के लिए अवसर है कि उस समय सभा भवन में आकर ज्यादा से ज्यादा धर्माराधना, तत्वज्ञान से आध्यामिकता की ओर बढ़ते हुए अपने जीवन को उज्जवल बनाए। मलनाड अध्यक्ष महावीर भंसाली ने साध्वीश्री का स्वागत करते हुए उनका परिचय एवं उनकी यात्रा का उल्लेख किया। इस उपलक्ष पर तेरापंथ सभा हासन के अध्यक्ष सोहनलाल तातेड, संस्थाओं के पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

करियर काउंसिलिंग का आयोजन

दिल्ली।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, दिल्ली की ओर से 'विकल्प'- करियर काउंसिलिंग का आयोजन किया गया। ओसवाल भवन, दिल्ली में आयोजित इस करियर काउंसिलिंग में लगभग 152 लोगों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से हुई। टीपीएफ दिल्ली अध्यक्ष कविता बरड़िया ने सभी का स्वागत किया, साथ ही टीपीएफ दिल्ली के करियर काउंसिलिंग कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर दिल्ली यूनिवर्सिटी के एसआरसीसी के पूर्व प्रिंसिपल डॉ. पी. सी. जैन शामिल हुए। उन्होंने बच्चों का मार्गदर्शन किया और बेहतर करियर कैसे चुनें इसके बारे में भी विस्तार से बताया। इस दौरान पांच अलग-अलग कोर्सेस के बारे में विस्तार से बच्चों को मार्गदर्शन दिया गया।

विकास बुच्चा ने AI/ML/Data Science के बारे में, प्रदीप चोरड़िया ने साइबर सिक्योरिटी के बारे में, प्रकाश बेंगानी ने डिजिटल मार्केटिंग, टीपीएफ दिल्ली के सेक्रेटरी हिमांशु कोठारी ने पीआर एंड एडवर्टाइजिंग के बारे में बच्चों को जानकारी दी। टीपीएफ दिल्ली के वाइस प्रेजिडेंट और कार्यक्रम के संयोजक राहुल जैन कार्यक्रम का सफल संचालन किया। वहीं उन्होंने बीबीए, एमबीए और एडमिशन से रिलेटेड मुद्दों पर अपने विचार रखे। रितु लुणिया ने बच्चों को तनाव कम करने की तकनीक के बारे में बताया। वर्क स्टेशन पर बच्चों ने एक्सपर्ट्स से वन-टू-वन बातचीत कर अलग-अलग कोर्सेस के बारे में विस्तार से जाना और उन कोर्सेस में दाखिले की प्रक्रिया को भी समझा।

कार्यक्रम में जेएसटी सभा दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा जी, जेएसटी शाहदरा अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, दिल्ली अणुव्रत समिति से शांतिलाल पटावरी के साथ कई गणमान्य सदस्यों की भी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में टीपीएफ दिल्ली के वाइस प्रेजिडेंट पांची जैन ने आभार ज्ञापन किया गया।

प्रेक्षा प्रवाह कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्वावधान में साध्वी रतिप्रभाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा प्रेक्षा प्रवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष कंचनदेवी ढेलडिया ने सभी का स्वागत किया और कार्यशाला की जानकारी दी। साध्वी रतिप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के आभारी हैं जिन्होंने हमें प्रेक्षाध्यान दिया। गुरुदेव कहा करते थे चिंता व्यक्ति को चिता पर ले जाती है। आज के इस माहौल में व्यक्ति को टेंशन के कारण छोटी उम्र में ही हार्ट अटैक, डिप्रेशन, बीपी, शुगर जैसी बीमारियां घर कर जाती है और व्यक्ति को छोटी उम्र में टेबलेट का सहारा लेना पड़ता है और कइयों की मौत भी हो जाती है। इन सब से बचने के लिए सभी को श्वास प्रेक्षा, प्रेक्षा ध्यान एवं कायोत्सर्ग का प्रयोग करना चाहिए।

साध्वी मनोज्ञयशाजी ने प्रेक्षाध्यान के बारे में बताते हुए कहा कि ध्यान बहुत ही पुराना विषय है, जिस के बारे में वेद और पुराणों में भी जानकारी प्राप्त होती है। ध्यान अपने से अपने की मुलाकात का माध्यम है। ध्यान में गहराई तक जाने वाले अपने पिछले जन्म की जानकारी भी कर लेते है। साध्वी कलाप्रभाजी ने ध्यान के बारे बताते हुए कहा कि प्रसन्नचंद्र राजर्षि ध्यान में ही 7 वीं नरक से सभी देवलोक पार करते हुए सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गए। साध्वी वृंद ने सभी बहनों को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। कार्यशाला का सफल संचालन मंत्री अरुणा डोसी ने किया और आभार ज्ञापन पूर्व अध्यक्ष फेनादेवी भंसाली ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

इरोड। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् इरोड द्वारा स्थानीय जैन भवन में एक दिवसीय रक्त दान शिविर का भव्य आयोजन हुआ। स्थानीय सरकारी अस्पताल के रक्त केन्द्र के सहयोग से 30 यूनिट रक्त का संग्रह किया गया।

महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत, सभा अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली, तेयुप अध्यक्ष महेंद्र भंसाली, मंत्री रिषभ नखत, मेडिकल प्रभारी दिलीप डागा एवं अन्य पदाधिकारियों की गणमान्य उपस्थिति रही। मेडिकल हेड इंचार्जेस शशिकला मैडम का सराहनीय सहयोग रहा।

पृष्ठ 13 का शेष

कषायों की तीव्रता से...

साधु और श्रावक दोनों रत्नों की माला है। एक बड़ी है, एक छोटी है। साधु सर्वव्रती है। इसलिए वह बड़ी माला के समान है। हमें सिद्ध भगवान जैसा बनना है। सिद्ध बनने के लिए शुद्ध बनना पड़ता है। वेशभूषा कैसी भी हो, आत्मा शुद्ध होनी चाहिए। अहिंसा, संयम और तप हमारे जीवन में रहे। व्यक्ति जैन बने या न बने पर गुडमैन अवश्य बने। मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने उपस्थित लोगों को कुछ क्षण प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी करवाया। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सारे जीव जीना चाहते हैं, कोई मरना नहीं चाहता। मनुष्य जीवन हमें उपलब्ध हुआ है, हम सफल और सार्थक जीवन जीयें ताकि हम सब दुःखों से छुटकारा पाकर मोक्ष को प्राप्त कर सकें। यदि जीवन को अच्छा नहीं बनाया तो जीवन बर्बाद हो जाएगा। जीवन को अच्छा बनाने के साधु के लिए पांच महाव्रत और गृहस्थ के लिए 12 अणुव्रत हैं, उन्हें जीवन में अपनाएं और आत्मा का कल्याण करें। पूज्यवर के स्वागत में वर्धमान नगर की ओर से कांतिलाल भाई शाह, स्थानीय आठ कोटी सम्प्रदाय से मंत्री हंसमुख भाई वोरा, छः कोटी समाज के अध्यक्ष अशोक भाई शाह, स्कूल की प्रिंसिपल गीता बेन सोनी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पावन स्मृति

सेठ हरगोपाल नन्हीदेवी जैन मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.)

सी-2/12, अपर ग्राउंड फ्लोर, प्रशांत विहार सेक्टर- 14, रोहिणी, दिल्ली 85

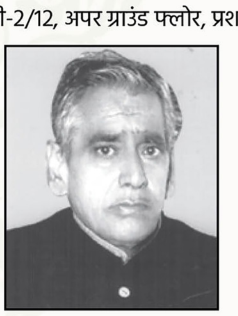

श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. हरगोपाल जैन
स्वर्गवास
12-02-1979

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. नन्ही देवी जैन
स्वर्गवास
18-02-2007

एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है, पर भीड़ में रहकर भी एकांत का-सा अनुभव करना परम मूल्यवान है।– आचार्यश्री महाश्रमण

नत्थूराम कुसुमलता जैन, नरेश जयश्री जैन, विनोद-कविता जैन
पुनीत गरिमा जैन, रितिक जैन, यशस्वी जैन, हेमांक जैन
(उकलाना-हिसार-दिल्ली)

धम्म जागरण का आयोजन

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा महावीरचन्द बोहरा की धर्मपत्नी कंचन देवी बोहरा के 180 एकासन के उपलक्ष में तेयुप राजाजीनगर द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर द्वारा धम्मजागरण का आयोजन किया गया। धम्म जागरण की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से करते हुए भिक्षु श्रद्धा स्वर समूह के सदस्य संजय मांडोत, अनिमेष चौधरी द्वारा भक्ति गीतों की प्रस्तुति से पूरे माहौल को भक्तिमय बनाते हुए तपस्वी के प्रति अनुमोदना व्यक्त की। तेयुप राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए तपस्वी की तपस्या की अनुमोदना करते हुए उनके स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक विकास के लिए मंगलकामना संप्रेषित की। बोहरा परिवार से शांतिलाल बोहरा ने परिषद परिवार का आभार व्यक्त किया।

बोलती किताब

अतीत का बसंत वर्तमान का सौरभ

अनुशासन बल - पहला तत्त्व है - मर्यादा या अनुशासन। जिस संघ को अनुशासन-बल प्राप्त होता है, वह शक्तिशाली होता है। जिसे यह प्राप्त नहीं होता, आकार में भले ही वह आकाश को नाप ले, बड़ा नहीं कहा जायेगा।

सिद्धान्त बल - दूसरा तत्त्व है सिद्धान्त बल। आचार्य भिक्षु ने सौभाग्य से हमें सिद्धान्त बल दिया है। तेरापंथ की स्थापना कोई हवाई स्थापना नहीं है। अनुशासन भी चल रहा है तो हवाई किलों से नहीं चल रहा है। मैं बिना किसी अहंकार और गर्वोक्ति से कहना चाहूंगा कि तेरापंथ को जितनी सिद्धान्तभूमि, आधारभूमि प्राप्त है, शायद किसी और को प्राप्त नहीं है। आचार्य भिक्षु ने अनेक ग्रन्थ लिखे-अहिंसा की चौपई, व्रताव्रत की चौपई, निक्षेप की चौपई। हर दृष्टि से उन्होंने सिद्धान्त पर बहुत बल दिया और नींव ऐसी मजबूत कर दी है कि उसके आधार पर अनगिनत मंजिलों वाला मकान खड़ा किया जा सकता है।

मनोबल - तीसरा तत्त्व है मनोबल। सौभाग्य से यह भी हमें प्राप्त है। मनोबल की एक लम्बी परंपरा और एक लम्बा इतिहास रहा है हमारे धर्मसंघ में। थोड़े में कहूं तो अब तक हमारे धर्मसंघ का जो और जितना विकास हुआ है, वह मनोबल के ही आधार पर हुआ है। हमने अपनी यात्रा शुरू की है गालियों की बौछारों के बीच, अपमानों के बीच, अवरोधों के बीच।

अध्यात्म बल - चौथा तत्त्व है—अध्यात्म बल। जिस संघ को अध्यात्म का बल प्राप्त नहीं होता, वह कभी बड़ा नहीं बन सकता। बीसवीं सदी की समाप्ति और इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर खड़ा हमारा धर्मसंघ अध्यात्म की दृष्टि से आज विश्व के किसी भी धर्मसंघ से बड़ा नहीं है तो कम तो है ही नहीं। बड़ा कहूं तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी।

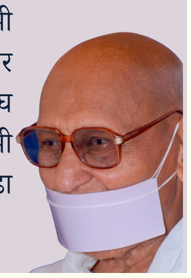

पुस्तक ऑनलाइन पढ़ने के लिए डाउनलोड करें सम्बोधि इ-लाइब्रेरी ऐप्प - SCAN ME
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
Sambodhi E-Library

सामाजिक सेवा कार्य

पूर्वांचल-कोलकाता।

मकर संक्रांति के अवसर पर तेयुप साथियों ने फूलबगान स्थित 'अपना घर' आश्रम में वृद्ध बुजुर्गों की सहायता हेतु खाद्य सामग्री वितरित की। राजेश कुमार हर्ष सिंघी के योगदान से सेवा कार्य में तेयुप पूर्वांचल के उपाध्यक्ष नीरज बैंगानी, कोषाध्यक्ष हर्ष सिरोहिया व कार्यसमिति सदस्य हर्ष सिंघी ने सहभागिता दर्ज कराई।

उत्तर कोलकाता।

तेयुपु, उत्तर कोलकाता द्वारा कंबल वितरण का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। आयोजन में लगभग 50 कंबलों का वितरण किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में नवरतनमल विनोद बैद एवं जतन नाहटा का विशेष सहयोग रहा।

हिंदमोटर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल हिंदमोटर के द्वारा 'आओ चले गाँव की ओर' के तहत कम्बल एवं खाद्य सामग्री वितरण का आयोजन रेलवे ऑटो स्टैंड बस्ती में किया गया। बस्ती के 45 परिवारों को वितरण का लाभ मिला। कार्यक्रम में उत्तरपाड़ा सभा के अध्यक्ष निकेश सेठिया ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम की संयोजिका कोमल बोथरा और प्रियंका डागा के सहयोग से कार्यक्रम सुचारू रूप से संचालित हुआ।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
10 फरवरी - 16 फरवरी, 2025
हे प्रभो! यह तेरापंथ

सक्षम शरीर से मिल सकता है साधना और निर्जरा में सहयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री रायचंदजी के महाप्रयाण दिवस पर आचार्य प्रवर ने की श्रद्धा प्रणति

माधापर।
28 जनवरी, 2025

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी वर्धमान नगर से विहार कर माधापर स्थित पान वल्लभ अतिथि गृह में पधारे। पूज्यवर के स्वागत में माधापर में अट्ठम तप की आराधना चल रही थी। पूज्यवर ने अट्ठम तप करने वालों को प्रत्याख्यान करवाया। मंगल देशना प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में कुछ कर्मचारी हैं, जिनके द्वारा कार्य संपन्न होता है। वे हैं - शरीर, वाणी और मन। हमें आत्मा को मालिक मानना चाहिए क्योंकि मूल तत्व आत्मा ही है, जो स्थायी तत्व है। शरीर, वाणी और मन तो अशाश्वत हैं। जब जीव मोक्ष में जाता है, तब ये तीनों तत्व नहीं रहते, केवल आत्मा शेष रहती है। इसलिए आत्मा ही मूल तत्व और मालिक है।

यह शरीर औदारिक शरीर है, परंतु कभी वैक्रिय या आहारक भी हो सकता है। आहारक शरीर केवल मनुष्यों का होता है, जबकि वैक्रिय शरीर चारों गतियों में पाया जा सकता है। औदारिक शरीर मनुष्य और तिर्यंच के होते हैं, जबकि आहारक शरीर केवल विशिष्ट ज्ञानी साधुओं का होता है।

हमारे पास स्थूल शरीर है, और इसके साथ ही सूक्ष्म शरीर तैजस तथा सूक्ष्मतर कार्मण शरीर भी होते हैं। शरीर से हम अनेक कार्य कर सकते हैं। इसमें भी दो हाथ और दो पांव – ये चार हमारे अच्छे कर्मचारी हैं। यदि ये मजबूत हैं, तो इनका अच्छा उपयोग करना चाहिए। हमारा संपूर्ण शरीर निरोग रहे तो हमारी साधना और निर्जरा में सहयोग मिल सकता है। वाणी के माध्यम से हम विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। मन के द्वारा हम चिंतन, स्मृतियां और कल्पनाएं करते हैं। मन से चिंतन कर व्यक्ति श्रेष्ठ कार्य कर सकता है। पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया कि आज माघ कृष्ण चतुर्दशी - हाजरी का दिन है। हाजरी में प्रायः सभी साधु-साध्वियां उपस्थित होते हैं। यह हमारे धर्म संघ के तीसरे आचार्यश्री रायचंदजी स्वामी के महाप्रयाण का दिवस भी है। वि. सं. 1908 में माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन रावलिया में आचार्यश्री रायचंद जी का महाप्रयाण हुआ था। वे आचार्य भिक्षु के समय में ही छोटी उम्र में दीक्षित हो गए थे। युवावस्था में वे आचार्य बने और लगभग 30 वर्षों तक उनका शासन रहा। गुजरात कच्छ में सबसे पहले पधारने वाले हमारे धर्म संघ के आचार्यश्री रायचंदजी स्वामी थे। उन्हें ब्रह्मचारी कहा जाता था। उनके उत्तराधिकारी श्रीमद् जयाचार्य का शासन भी लगभग 30 वर्षों तक रहा। मैं पूज्य ऋषिरायजी को मंगल भावों से वंदना करता हूं। थली क्षेत्र का भी प्रादुर्भाव पूज्य ऋषिराय महाराज के समय हुआ था।

पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए कहा कि तेरह अवयवों वाला साधु का धर्म है, इसके प्रति हमें जागरूक रहना चाहिए। यह साधु का आचार है। आचार्यश्री की अनुज्ञा से साध्वी देवार्यप्रभाजी व साध्वी आर्षप्रभाजी ने लेखपत्र का वाचन किया। आचार्यश्री ने दोनों साध्वियों को तीन-तीन कल्याणक बक्सीस किए। तदुपरान्त साधु-साध्वियों ने अपने स्थान खड़े होकर लेखपत्र का उच्चरित किया।

पूज्यवर के स्वागत में तेरापंथी सभा-माधापर के अध्यक्ष सुरेशभाई मेहता, समस्त जैन समाज के प्रमुख हितेशभाई खण्डोल, मूर्तिपूजक जैन संघ के प्रमुख बसंतभाई मेहता, स्थानकवासी जैन संघ के प्रमुख बसंतभाई भाभेरा, यक्ष बोतेरा संघ के मैनेजिंग ट्रस्टी नरेशभाई शाह ने अपनी-अपनी अभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला की बालिका काव्यश्री खण्डोल ने अपनी प्रस्तुति दी। सूरत चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा पूज्य सन्निधि में सोशयल मिडिया का प्रतिवेदन लोकार्पित किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ज्ञान के संचय से संभव है आत्मशुद्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

महाप्रज्ञनगर।
30 जनवरी, 2025

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ महाप्रज्ञनगर में स्थित नवनिर्मित तेरापंथ भवन में पधारे। आचार्यश्री से मंगलपाठ का श्रवण कर स्थानीय श्रद्धालुओं ने इस नवीन तेरापंथ भवन का लोकार्पण किया।अमृत देशना प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि मनुष्य का शरीर औदारिक शरीर होता है। वैसे मनुष्य के पास पाँचों शरीर भी हो सकते हैं। औदारिक शरीर में पाँच इंद्रियाँ होती हैं, जिनमें श्रोत्रेंद्रिय और चक्षुरिंद्रिय का विशेष महत्व है।

नामों की दृष्टि से पाँच इंद्रियों के तीन प्रकार के वर्गीकरण मिलते हैं—

1. स्पर्श, रस, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र
2. श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रस और स्पर्श
3. चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा और काय

इन्द्रियों का क्रम तीन रूपों में प्राप्त हुआ है। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि मैंने इस वर्गीकरण का विश्लेषण किया तो मुझे तीन संभावित कारण प्रतीत हुए। पहला संदर्भ है - विकास का क्रम। जीवों में सबसे पहले एकेंद्रिय यानी केवल स्पर्शेंद्रिय होती है। फिर क्रमशः विकास के साथ द्वींद्रिय से लेकर पंचेंद्रिय तक रस, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र का क्रमिक विकास होता है। इसे हम उत्सर्पिणी काल से समझ सकते हैं, जिसमें समय के साथ जीवों की क्षमता बढ़ती जाती है।

दूसरा वर्गीकरण अवसर्पिणी काल के उदाहरण से समझा जा सकता है। इसमें श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रस और स्पर्श के क्रम को देखा जाता है, जो विपरीत दिशा में यानी पाँच इंद्रियों से घटते हुए एकेंद्रिय तक जाता है। यह विकास से ह्रास की ओर बढ़ने वाली प्रक्रिया है।

तीसरे वर्गीकरण में चक्षु इंद्रिय को पहले स्थान पर रखा गया है। पाँच इंद्रियों में चक्षु (आँख) का विशेष महत्व है, क्योंकि देखने से चीजें स्पष्ट होती हैं। ज्ञान की दृष्टि से भी चक्षुरिंद्रिय का महत्व श्रोत्रेंद्रिय से अधिक माना जाता है। श्रोत्रेंद्रिय का भी ज्ञान ग्रहण में महत्वपूर्ण योगदान है। सुनकर भी हम अपार ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। हजारों वर्ष पहले लोग सुन-सुनकर ही ज्ञान प्राप्त करते थे। व्यक्ति सुनकर कल्याणकारी और अकल्याणकारी दोनों बातों को जान सकता है। दोनों को समझकर, जो श्रेयस्कर हो, उसे अपनाने से आत्मा का कल्याण संभव है। जनता प्रवचन में बैठकर सामायिक करती है, जिससे उनमें एकाग्रता बढ़ती है, ज्ञान प्राप्त होता है और सांसारिक गतिविधियों से कुछ समय के लिए मुक्ति मिल सकती है। ग्राहक बुद्धि से यदि कोई व्यक्ति वक्ता को सुने, तो वह बोलने की शैली भी सीख सकता है। सुनने से कई बार समस्या या जिज्ञासा का समाधान भी हो जाता है। लगातार बूंद-बूंद की तरह ज्ञान का संचय करने से बुद्धि विकसित होती है और आत्मशुद्धि एवं निर्जरा संभव हो सकती है।

ज्ञान बढ़ाने के लिए हमें अच्छा सुनना, अच्छा देखना, अच्छा बोलना, अच्छा सोचना और अच्छा करना चाहिए। अच्छा देखने से सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं, जिनका प्रभाव हमारी चेतना पर पड़ता है। अच्छे और बुरे का सही ज्ञान प्राप्त कर, जो श्रेयस्कर हो, उसे अपने जीवन में उतारना चाहिए। जब ऐसा होगा, तब शास्त्रों की वाणी हमारे लिए कल्याणकारी सिद्ध होगी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि भारत अध्यात्म प्रधान देश है। यहाँ ऋषियों और महर्षियों का सदैव सम्मान किया गया है। सामान्य जन से लेकर बड़े-बड़े पदों पर आसीन व्यक्ति भी आचार्य प्रवर से मार्गदर्शन प्राप्त करने आते हैं। गुरु में गुरुता (महानता) होती है, वे अकिंचन होते हैं। जब हम संन्यास ग्रहण करते हैं, तो गुरु हमें पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति रूपी तेरह करोड़ की आध्यात्मिक संपत्ति प्रदान करते हैं। अकिंचन व्यक्ति ही संपूर्ण लोक का स्वामी होता है। जो व्यक्ति अकिंचन होता है, वह स्वयं भी सुखी होता है और चक्रवर्ती सम्राट तक उसका सम्मान करते हैं। पूज्यवर के स्वागत में तेरापंथी सभा-भुज के अध्यक्ष वाणीभाई मेहता, रसिकभाई मेहता, चंदूभाई संघवी, मुकेश मेहता, अशोकभाई खण्डोल, शांतिलाल जैन, त्रिभुवन सिंघवी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। महाप्रज्ञनगर की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। बालिका परी ने अपनी बालसुलभ प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अहिंसा, संयम और तप की साधना से सुनिश्चित है कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

गुजरात की धरा पर प्रथम मर्यादा महोत्सव हेतु भुज में हुआ मर्यादा पुरुषोत्तम का प्रवेश

भुज।
31 जनवरी, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में गुजरात की धरा पर पहली बार हो रहे तेरापंथ के महाकुंभ - मर्यादा महोत्सव हेतु कच्छ के भुज नगर में तेरापंथ के महासूर्य, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का अपनी धवल सेना संग मर्यादित जुलुस के साथ इस पावन पदार्पण हुआ। लगभग 3.6 कि.मी. का विहार सम्पन्न कर पूज्य प्रवर भुज के श्री लालचंद थावर जैन महाजनवाड़ी में मर्यादा महोत्सव सहित 17 दिवसीय प्रवास हेतु पधारे।

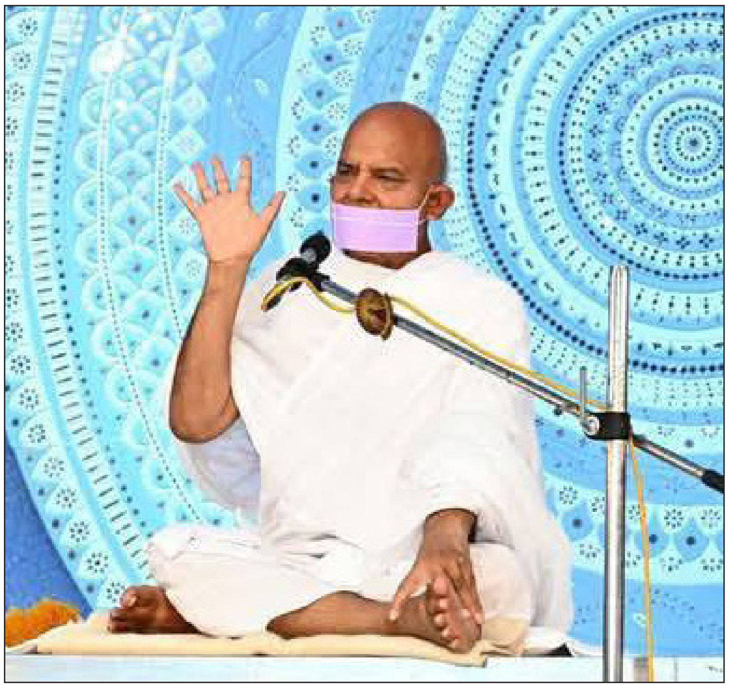

कच्छी पूज समवसरण में मर्यादा पुरुष आचार्य प्रवर ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में मंगल की कामना की जाती है। लोग दूसरों के प्रति मंगल भावना व्यक्त करते हैं और स्वयं के मंगल की भी इच्छा रखते हैं। कार्य में निर्विघ्नता बनी रहे, कार्य सुचारू रूप से संपन्न हो जाए—यह स्वाभाविक आकांक्षा होती है। मंगल पाठ सुनने के पीछे भी मंगल की आकांक्षा हो सकती है। आचार्यों एवं चारित्रात्माओं द्वारा मंगल पाठ सुनाना और भी अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

हर शुभ कार्य के लिए अच्छा मुहूर्त देखा जाता है, जिसमें मंगल भावना सन्निहित होती है। कई अन्य मंगलकारी पदार्थ भी होते हैं, लेकिन यह सभी बाहरी मंगल हैं। शास्त्रकारों ने धर्म को परम मंगल बताया है, क्योंकि धर्म ही ऐसा है जो हर समय, हर क्षण हमारे साथ रहता है। शास्त्रों में एक अद्भुत बात कही गई है कि जहाँ अहिंसा, संयम और तप है, वहीं धर्म का उत्कृष्ट मंगल विद्यमान है। जो व्यक्ति अहिंसा, संयम और तप की आराधना व साधना करेगा, उसका कल्याण सुनिश्चित है। यह एक असांप्रदायिक सत्य है, जिसे शास्त्रों ने प्रतिपादित किया है।

जिसका मन सदैव धर्म में रमा रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं। अच्छी बात का सभी जगह सम्मान होना चाहिए। हम भगवान महावीर के शासन से जुड़े जैन शासन में साधना कर रहे हैं। जैन शासन में अनेक परंपराएँ हैं। हम तेरापंथ धर्मसंघ में साधना कर रहे हैं, जिसके आद्य आचार्य, परम आराध्य आचार्य भिक्षु हुए हैं। वे तेरापंथ के जनक हैं। हमारे चतुर्थ आचार्य, श्रीमद् जयाचार्य हुए, जिन्होंने मर्यादा महोत्सव की परंपरा का सूत्रपात किया था। इसकी स्थापना 160 वर्ष पूर्व हुई थी।

हमारे सप्तम आचार्य, आचार्य डालगणी विलक्षण आचार्य हुए, जिन्हें हमारे पूर्वाचार्यों ने नहीं, बल्कि स्वयं धर्मसंघ ने आचार्य के रूप में स्वीकार किया था। मुनि जीवन में पूज्य डालगणी ने तीन बार कच्छ की यात्राएँ की थीं, वे 'कच्छी पूज' कहलाए। हमारे तृतीय आचार्य पूज्य रायचंद्रजी स्वामी, सर्वप्रथम कच्छ में पधारे थे।

आचार्यश्री तुलसी सन् 1967 में कच्छ पधारे थे, जबकि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी कच्छ नहीं आ सके थे। आज हम विधिवत रूप से यहाँ प्रविष्ट हुए हैं। मर्यादा महोत्सव के संबंध में ही हमारा यह आगमन हुआ है। मर्यादाओं का सम्मान हमारे व्यक्तिगत जीवन, संगठन और राष्ट्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब तक मर्यादा में रहेंगे, तब तक व्यवस्था सुचारू बनी रहेगी, अनुशासन की परंपरा चलेगी और विकास की संभावनाएँ बनी रहेंगी। आदमी को अपनी मर्यादा में रहने का प्रयास करना चाहिए। मर्यादा के अतिक्रमण के प्रमाद से बचने का प्रयास करना चाहिए।

हमारे साथ साधु-साध्वियाँ, समणियाँ और मुमुक्षु बहनें भी हैं। हम अपने ढंग से धर्मसंघ में साधना करते रहें। हमें मर्यादा और अनुशासन का सम्मान करना चाहिए। विनय की भावना सदैव बनी रहनी चाहिए। गृहस्थों में भी मैत्री भावना हो और सभी समाजों में सौहार्द की भावना बनी रहे।

भुज प्रवेश के अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने कहा कि अनेक पदार्थ ठंडे हो सकते हैं, लेकिन सबसे ठंडी और शीतल वस्तु जिनवाणी होती है। अन्य पदार्थ बाह्य रूप से ठंडक पहुँचा सकते हैं, लेकिन जिनवाणी आंतरिक शीतलता प्रदान करती है। आचार्य प्रवर जिनवाणी के माध्यम से लोगों को आत्मिक शीतलता प्रदान करने के लिए भुज में पधारे हैं। आचार्यवर ने कच्छ पर जो करुणा बरसाई है, वह वास्तव में एक उदाहरण है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति-भुज के अध्यक्ष कीर्तिभाई संघवी, स्वागताध्यक्ष नरेन्द्रभाई मेहता, स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष वाणीभाई मेहता ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मण्डल, भुज ने स्वागत गीत का संगान किया। भुज ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। भुज के सात संघों के सदस्यों ने एक साथ स्वागत गीत का संगान किया। सात संघ के प्रमुख स्मितभाई झवेरी ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए आचार्यश्री को अभिनंदन पत्र अर्पित किया। स्थानीय तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष स्नेह मेहता व मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष चंदूभाई संघवी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ कन्या मण्डल व तेरापंथ किशोर मण्डल ने संयुक्त रूप से अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

कषायों की तीव्रता से मिलता है पुनर्जन्म को सिंचन : आचार्यश्री महाश्रमण

वर्धमान नगर।
27 जनवरी, 2025

वर्धमान के प्रतिनिधि, वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ कच्छ - भुज की ओर अग्रसर होते हुए वर्धमाननगर में स्थित बी.एम.सी.बी. पब्लिक स्कूल में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि जैन दर्शन दुनिया और भारत के अनेक दर्शनों में एक दर्शन है। जैन दर्शन में अनेक सिद्धान्त हैं। आत्मा, कर्म, लोक आदि के सिद्धान्त जैन दर्शन में प्राप्त हैं। जैन दर्शन में आत्मा का त्रैकालिक अस्तित्व माना गया है। आत्मा शाश्वत है, प्रत्येक आत्मा अनन्त काल पहले विद्यमान थी, वर्तमान में भी है और अनन्त काल बाद भी दुनिया में रहेगी। आत्मा का कभी नाश नहीं होता। आत्मा को कोई काट नहीं सकता, जला नहीं सकता, कोई गीला या सुखा नहीं सकता। आत्मा के सिद्धांत में यह भी बताया गया है कि आत्मा का पुनर्जन्म होता है। जब तक आत्मा को मोक्ष प्राप्त नहीं हो जाता, आत्मा जन्म-मरण के चक्र में उलझी हुई रहती है। नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव- इन चार गतियों में अपने कर्मों के अनुसार जन्म-मरण करती रहती है।

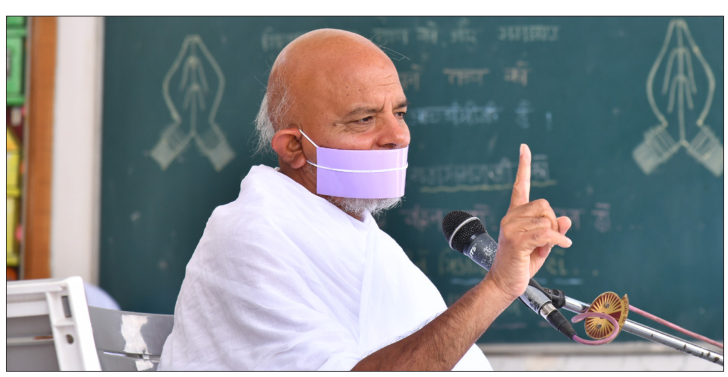

एक आत्मा के अनेक प्रदेश होते हैं। असंख्य प्रदेशों में से कभी भी एक प्रदेश कम नहीं होता और एक भी प्रदेश बढ़ नहीं सकता। सब आत्माओं के एक समान प्रदेश होते हैं। केवली समुद्घात के समय आत्मा के प्रदेश एक समय में पूरे लोकाकाश में फेल जाते हैं। जितना बड़ा लोकाकाश है उतनी बड़ी हमारी आत्मा है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश और एक जीव इन चारों के प्रदेश असंख्य और समान है।

आत्मा फैलती है तो पूरे लोकाकाश में फैल जाती है और सिकुड़ती है तो एक कुंथु जैसे छोटे से जीव में समाविष्ट हो जाती है। आत्मा पुनर्जन्म भी लेती है। जब तक मोक्ष न हो जाए चारों गति में जन्म-मरण करती रहती है। अव्यवहार राशि के जीव जो वनस्पतिकाय में है वे तो अनन्त काल तक उसी में रहते हैं। व्यवहार राशि में भी जितने जीव हैं, उतने ही रहते हैं।

पूर्वजन्म है तभी पुनर्जन्म की बात है। प्रश्न हो सकता है कि पुनर्जन्म क्यों होता है? शास्त्रों में बताया गया है कि क्रोध, मान, माया और लोभ रूपी कषायों के कारण पुनर्जन्म होता है। ये कषाय ही पुनर्जन्म के हेतु होते हैं। कषायों की तीव्रता से पुनर्जन्म को सिंचन मिलता है। जब तक कषाय रहेगा, मोक्ष नहीं होगा। जन्म-मरण से जीव को कितने दुःख भोगने पड़ते हैं। साधु बनने का मूल प्रयोजन होना चाहिए कि जन्म-मरण की परम्परा से छुटकारा पाना और मोक्ष को प्राप्त कर लेना।

हम जैन शासन में साधना कर रहे हैं। ज्ञान की कितनी बातें हमें 32 आगमों से प्राप्त होती है। भगवान महावीर जैन शासन के नायक और हम सब के धर्म पिता हैं, हम उनकी संतानें हैं। जैन शासन का अपना ज्ञान और आचार है। धर्म की साधना से जन्म-मरण की परम्परा से छुटकारा मिल सकता है। श्रावक बनने का भी वही प्रयोजन है।

(शेष पेज 11 पर)

दुर्लभ मानव जीवन में न हो इंद्रियों का दुरुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

नागरिक अभिनंदन समारोह में आचार्य प्रवर को भेंट की गई भुज शहर की प्रतीकात्मक चाबी

भुज।
01 फरवरी, 2025

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'कच्छी पूज समवसरण' में अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रों में कल्याणकारी वाणी प्राप्त होती है। जैन ग्रंथों में उत्तराध्ययन एक प्रमुख आगम है। इसके 32वें अध्ययन में इंद्रियों और मन के बारे में एक विस्तृत विश्लेषण मिलता है। मनुष्य शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं और पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी होती हैं। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से हमें ज्ञान प्राप्त होता है और ये ज्ञानेन्द्रियाँ भोग में भी सहायक होती हैं।

श्रोत्र (कान) एक ज्ञानेन्द्रिय है, जिसके द्वारा हम सुनते हैं और सुनकर ज्ञान प्राप्त करते हैं। चक्षु (आँख) से हम देखते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं। घ्राणेन्द्रिय (नाक) के द्वारा हम गंध ग्रहण करते हैं और गंध से संबंधित ज्ञान प्राप्त करते हैं। रसन (जीभ) के द्वारा हम स्वाद ग्रहण करते हैं और स्वाद की जानकारी प्राप्त करते हैं। स्पर्शेन्द्रिय (त्वचा) के माध्यम से हमें स्पर्श का अनुभव होता है, जिससे ठंडे-गर्म आदि स्पर्शों का बोध होता है।

बाह्य जगत का ज्ञान प्राप्त करना इंद्रियों का कार्य है। हमारे दो जगत होते हैं—बाह्य जगत और अंतर्जगत। भीतरी जगत के ज्ञान में भी इन्द्रियां सहायक बनती हैं, किन्तु भीतरी ज्ञान मूलतः चेतना से प्राप्त होता है। हमारे जीवन में दो मूल तत्व होते हैं—शरीर और आत्मा। संपूर्ण संसार भी दो तत्वों में ही समाहित है—चेतन और अचेतन।

आत्मा और शरीर का संयोग ही जीवन है। आत्मा और शरीर का वियोग मृत्यु है। जब यह वियोग सदा के लिए हो जाता है, तो वह मोक्ष कहलाता है। यही जीवन, मृत्यु और मोक्ष की परिभाषा है। जिस प्राणी के पास पाँचों इंद्रियाँ होती हैं, उसे विकसित प्राणी माना जा सकता है। मानव जीवन को दुर्लभ बताया गया है। इस दुर्लभ मानव जीवन का हमें सदुपयोग करना चाहिए क्योंकि यह शाश्वत नहीं है, अनिश्चित है।

हमारा जीवन अनित्य और अस्थायी है, तो इसमें ऐसा क्या किया जाए कि दुर्गति में न जाना पड़े? इसका उपाय यही है कि इंद्रियों का दुरुपयोग न करें। इनके विषयों में राग-द्वेष न करें। जब समता की साधना पुष्ट होती है, तो यह मानव जीवन को सफल बनाने का एक मार्ग बन सकता है।

शब्द तो कान का स्पर्श करता है, लेकिन दृश्य आँख का स्पर्श नहीं करता। श्रोत्र और चक्षु कर्मेन्द्रियाँ हैं, जबकि नाक, जीभ और त्वचा भोगेन्द्रियाँ कहलाती हैं। इन इंद्रियों में न समता भाव उत्पन्न होता है, न विकृति आती है। चेतना में जो राग-द्वेष की वृत्ति होती है, वही जब बढ़ती है, तो हम शब्द, रूप आदि में राग भी कर लेते हैं और कभी द्वेष भी करने लगते हैं। यदि हम राग-द्वेष से बचें, तो मानव जीवन को सफल बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

गृहस्थ जीवन में भी आध्यात्मिकता और धर्म की साधना बनी रहनी चाहिए। जीवन में नैतिकता हो, नशा-मुक्त रहें, और सबके साथ सद्भावना रखें। हम लोग अपना सारा परिग्रह त्याग कर साधु बन चुके हैं। आप लोग भी परिग्रह की मर्यादा रखें। त्याग और विसर्जन की भावना अपनाएँ। जीवन सादगीपूर्ण रहे। त्याग, साधना और धर्म की उपयोगिता सदा बनी रहती है।

हमारी यह यात्रा धर्म और संयम की यात्रा है। भुज में हमारा आगमन हुआ है, और इसी प्रवास के साथ हमारे धर्मसंघ का एक महत्वपूर्ण उत्सव—मर्यादा महोत्सव—आयोजित होने जा रहा है। मर्यादा, विधान और अनुशासन के प्रति हमारी निष्ठा बनी रहे। मर्यादा सभी के लिए हितकारी और कल्याणकारी हो सकती है। हमें मर्यादा के प्रति सदैव जागरूक रहना चाहिए।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने समुपस्थित जनता को सम्बोधित करते हुए कहा - कच्छ की धरा के लोगों में धर्म और धर्म गुरुओं के प्रति आदर और सम्मान का भाव है। संस्कृत साहित्य में बताया गया कि वह व्यक्ति जिसका मुखारविंद प्रसन्नता का घर है, जिसके हृदय में दया का भाव है, जिसकी वाणी अमृत बरसाती है और जो परोपकार करते हैं ऐसे व्यक्ति सबके लिए आदरणीय और वंदनीय होते हैं। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ऐसे महापुरुष हैं जो सबके लिए आदरणीय और वंदनीय हैं।

आचार्यश्री के नागरिक अभिनंदन समारोह के सन्दर्भ में कच्छ के जिला कलेक्टर अमित अरोड़ा ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि मैं पूरे जिले की ओर से आचार्यश्री का खूब-खूब स्वागत करता हूं। भुज की नगराध्यक्ष रश्मिबेन सोलंकी, भुज के विधायक केशु भाई पटेल, पूर्व विधायक पंकजभाई मेहता, गुजरात विधानसभा की पूर्व अध्यक्ष निमाबेन आचार्य, बुलियन मर्चेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष भद्रेश भाई दोसी व चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष अनिल भाई गौर ने आचार्य प्रवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्य प्रवर को भुज नगर की प्रतीकात्मक चाबी अर्पित की। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति ऐसी सूत्रत्रयी है, जिसके माध्यम से नगर में सर्वत्र सौहार्द रह सकता है। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के महामंत्री शांतिलाल जैन एवं प्रभुभाई मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए।

सुकृत कार्य के लिए करें समय का उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

माधापर।
29 जनवरी, 2025

भैक्षव गण सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी ने माधापर प्रवास के द्वितीय दिन अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि बत्तीस आगमों में उत्तराध्ययन एक प्रमुख आगम है, जिसमें 36 अध्ययन हैं। कुछ अध्ययन तात्विक जानकारी से परिपूर्ण हैं, कुछ अध्ययन परिसंवाद के रूप में हैं, कहीं घटना-प्रसंग हैं, तो कहीं शिक्षण-प्रशिक्षण और अध्यात्म का दिशा दर्शन उपलब्ध होता है।

उत्तराध्ययन के दसवें अध्ययन की विशेषता यह है कि उसमें एक श्लोक को छोड़कर सभी श्लोकों का चौथा चरण समान है - 'समयं गोयम मा पमायए', जिसका अर्थ है— 'गौतम! समय का प्रमाद मत करो।' गौतम का नाम तो प्रतीक है, यह संदेश हम सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

समय बहुमूल्य है, लेकिन यह हमें निःशुल्क प्राप्त होता है। निःशुल्क मिलने वाली वस्तु का भी हमें उचित मूल्यांकन करना चाहिए। दुनिया में अच्छा और घटिया व्यक्ति कौन है ? पूज्य प्रवर ने समाधान देते हुए फ़रमाया कि मैंने एक परिभाषा बनाई है— 'समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति अच्छा होता है और समय का दुरुपयोग करने वाला व्यक्ति तुच्छ होता है।' समय को व्यर्थ न जाने दें। वर्षा के जल की भांति इसे संचित कर उपयोगी बनाएं, इसे व्यर्थ न बहने दें।

जीवन कितना लंबा होगा, यह हमारे हाथ में नहीं है, लेकिन जीवन को कैसे जीना है, यह हमारे हाथ में है। हर रात सोने से पहले चिंतन करें कि आज मैंने सुकृत क्या किया? धर्म का कौन-सा

विशेष कार्य किया? सूर्य प्रतिदिन उदय होकर सायंकाल अस्त हो जाता है, और उसके साथ ही हमारे आयुष्य का एक अंश भी समाप्त हो जाता है। प्रतिदिन हमारी उम्र घट रही है।

सुफल, दुष्फल और निष्फल— ये तीन श्रेणियां होती हैं। यदि दिनभर अच्छे कर्म किए, तो वह सुफल है। यदि दिनभर पापकर्म किए, तो वह दुष्फल है। यदि न धर्म किया, न पाप किया, तो वह निष्फल है। हमें अपने समय को फलदायी बनाने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ व्यक्ति सोचे कि क्या मैंने आज सामायिक की, किसी की धार्मिक या आध्यात्मिक सेवा की? यदि हां, तो उसका दिन सुफल हो गया। जैसे ओस की बूंद गिरकर समाप्त हो जाती है, वैसे ही हमारा एक दिन समाप्त हो जाता है। इसलिए कहा गया है— समय का प्रमाद मत करो।

जो व्यक्ति ज्ञान, ध्यान या अच्छे कार्यों में संलग्न नहीं रहता और पूरा दिन व्यर्थ ही घूमता रहता है, वह जीवन को निष्फल बना रहा है। समय का उचित प्रबंधन आवश्यक है। हर व्यक्ति में अलग-अलग योग्यताएं होती हैं, इसलिए अपनी क्षमता के अनुरूप समय का सदुपयोग करें। हमारे जीवन की कोई उपयोगिता सिद्ध होनी चाहिए। हमें समय को सुफल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यवर के श्रीचरणों में साध्वी गौरवयशाजी एवं साध्वी नवीनप्रभाजी ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। स्थानीय सभा के अध्यक्ष संजय संघवी, जीतू भाई भाभेरा, शशिकांतभाई भाभेरा ने अपने उद्गार व्यक्त किये। जैनम व झील संघवी, दीप्ति और रिया जैन तथा संघवी परिवार की महिलाओं ने गीत का संगान किया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा 77वें अणुव्रत स्थापना दिवस के बैनर का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

वैयावृत्य से हो सकता है तीर्थंकर नाम-गोत्र का बंध : आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिन हुई सेवा केंद्रों में सेवादायी सिंघाड़ों की घोषणा

साध्वियों के सेवा केंद्र

लाडनूं सेवा केंद्र : साध्वी कार्तिकयशाजी
बीदासर समाधि केंद्र : साध्वी मंजुयशाजी
श्रीडूंगरगढ़ सेवा केंद्र : साध्वी संगीतश्रीजी और साध्वी परमप्रभाजी
गंगाशहर सेवा केंद्र : साध्वी विशद प्रज्ञाजी और साध्वी लब्धियशाजी
हिसार उपसेवा केंद्र : साध्वी शुभप्रभाजी

संतों के सेवा केंद्र

छापर सेवा केंद्र : मुनि देवेन्द्र कुमारजी
लाडनूं सेवा केंद्र : मुनि विजयकुमारजी

गंगाशहर : मुनि कमलकुमारजी

स्मृतिवन, भुज।
02 फरवरी, 2025

गुजरात प्रांत के कच्छ क्षेत्र के भुज में आयोजित तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादाओं का महोत्सव—161वां मर्यादा महोत्सव का प्रथम दिवस।

भैक्षव शासन के एकादशम अधिशास्ता, महामनस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ, तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु एवं उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा एवं मर्यादा महोत्सव के संस्थापक श्रीमद् जयाचार्य का स्मरण करते हुए 161वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। इसके साथ ही आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित अंतिम मर्यादा पत्र को स्थापित किया।

बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि दिनेश कुमार जी ने उद्घोष एवं गीत का संगान किया। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति-भुज के स्वागताध्यक्ष नरेन्द्रभाई मेहता ने अपनी अभिव्यक्ति दी। उपासक श्रेणी के सदस्यों ने 'शासन में काम करें जीवन भर' गीत का सुमधुर संगान किया।

महामनीषी आचार्य प्रवर ने मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिन धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा - आज जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ का त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव समारोह आरंभ हुआ है। यह बसंत पंचमी के दिन से प्रारंभ होता है। मेरा प्रश्न है कि यह त्रिदिवसीय कार्यक्रम कब से प्रारंभ हुआ तथा सेवा केंद्रों में सेवा-चाकरी करने की परंपरा कब से शुरू हुई?

सेवा हेतु साध्वी वृंद द्वारा निवेदन

साध्वी मुदितयशाजी ने सेवा के महत्व को उजागर करते हुए कहा कि निर्युक्तिकार आचार्य भद्रबाहु ने सेवा के चार प्रयोजन प्रस्तुत किए, यथा -समाधि, ग्लानि निवारण, प्रवचन प्रभावना एवं सनाथता की अनुभूति। साध्वी वृंद ने 'श्रमणवरगंधहस्ति' आचार्य प्रवर से सेवा की प्रार्थना की।

मुनिवृंद द्वारा सेवा का निवेदन

मुनिश्री कुमारश्रमणजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि सेवा करने के दो भाव हैं - साधना और कृतज्ञता। तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा को साधना और निर्जरा से जोड़ा गया गया है। यहाँ आदर, विनम्रता, धैर्य और जागरूकता सेवा को विलक्षण बनाते हैं। मुनिवृंद ने भी आचार्य प्रवर से सेवा का अवसर प्रदान करने का निवेदन किया।

सेवा का महत्व:

सेवा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि उत्तराध्ययन के 29वें अध्ययन में प्रश्न किया गया कि वैयावृत्य करने से जीव को क्या प्राप्त होता है? उत्तर दिया गया - इससे जीव तीर्थंकर नाम-गोत्र का बंध कर लेता है। सेवा का बड़ा महत्त्व है, वैयावृत्य से पुण्योपार्जन हो सकता है, परन्तु हमें पुण्य बंध की लालसा नहीं करनी चाहिए। चाहे हम तीर्थंकर बने या न बने, तपस्वी और साधु तो बने ही रहना चाहिए। सेवा का भाव निरंतर बना रहना चाहिए, क्योंकि सेवा एक ऐसा तत्व है जिसमें अहिंसा निहित होती है। सेवा देने वाला हर स्थिति में समभाव बनाए रखे।

सेवा अनेक रूपों में हो सकती है— दूसरों के लिए कार्य करना, वैयावृत्य करना, वृद्धों की सेवा करना, बीमार और असहायों की सहायता करना, प्रशासनिक कार्यों में योगदान देना, प्रवचन करना, अध्यापन करना, साधु-साध्वियों की व्यवस्था, पृच्छा करना, समाज की संस्थाओं को दृष्टि देना, यात्राएं करना आदि सब सेवा के ही रूप हैं। प्रवचन करना भी एक प्रकार की सेवा है। साधु-साध्वियां न्यारा में रहें तो आठ प्रहर में एक बार व्याख्यान देने का प्रयास करना चाहिए। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के समय तो माईक आदि की व्यवस्था भी नहीं होती थी, तब भी वे प्रतिदिन प्रवचन किया करते थे। आज कई साधु-साध्वियों का दीक्षा दिवस है, दीक्षा देना भी एक प्रकार की सेवा है। मुनि कुमारश्रमणजी के निमित्त से दीक्षा की बात याद आ गई।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था की मुमुक्षु बाइयों को संभालना भी अच्छी सेवा है। साध्वीवर्या और अनेक समणियां भी इस कार्य से जुड़ी हुई हैं। समाज के लोग अपने ढंग से ध्यान दे लेते हैं। इनकी सेवा करना भी अच्छी बात होती है। मुमुक्षु की संख्या वृद्धि का प्रयास जितना संभव हो सके, करने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्य प्रवर ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी समारोह के मध्य सेवा केंद्रों की नियुक्ति करते थे। मैं भी उनका अनुकरण करते हुए समारोह के मध्य नियुक्ति कर रहा हूँ। पूज्य प्रवर द्वारा धर्मसंघ के विभिन्न सेवा केंद्रों में सेवा दायी सिंघाड़ों की नियुक्ति की गई।

पूज्य प्रवर ने आगे कहा कि सभी अपने-अपने ढंग से यथा योग्य सेवा देने का प्रयास करते रहें। सेवा देने वाले चित्त समाधि और साता में रहें और सेवा लेने वाले भी विवेक और पुरुषार्थ का परिचय दें। सबमें सेवा का संस्कार बना रहे। पूज्य प्रवर ने फ़रमाया कि श्रावक-श्राविका समाज भी अनेक रूपों में सेवा करता है। चिकित्सीय सेवा, मार्ग सेवा और अन्य सेवाओं में संलग्न होना भी महत्वपूर्ण है।

यूनीक है तेरापंथ धर्मसंघ

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा - सेवा एक शाश्वत धर्म है। यह अपने और पराये के बीच की भेदरेखा को मिटने का उपाय है। आज के दिन तेरापंथ धर्मसंघ के सरताज सेवा केंद्रों के लिए साधु-साध्वियों की नियुक्ति करते हैं। ठाणं सूत्र में कहा गया है - साधु को आठ स्थानों में जागरूक रहना चाहिए। उनमें से एक है - ग्लान की सेवा। जैन शासन के गौरवशाली अध्याय 'तेरापंथ' की यूनीकनेस का एक कारण है - सेवा केंद्रों की स्थापना। यहाँ साधु-साध्वियों की सेवा गृहस्थ द्वारा नहीं साधु-साध्वियों द्वारा ही की जाती है। धर्मसंघ में आचार्य प्रवर द्वारा सेवा और चिकित्सा की व्यवस्था की जाती है। इस व्यवस्था को बनाये रखने में साधु-साध्वियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। हमारे साधु-साध्वी भी शरीर चला जाए पर सेवा से पीछे नहीं हटते।

सेवा में समण श्रेणी भी अच्छा परिचय देती है। श्रावक समाज भी सेवा में जागरूक और तत्पर रहता है। चिकित्सा ही नहीं, विहार सेवा, पर्युषण साधना में उपासक श्रेणी, संघीय संस्थाओं आदि में श्रावक समाज की संघ निष्ठा यूनीक है। हम अहंकार और ममकार को विकलित कर महान निर्जरा की भावना से संघ सेवा में योगभूत बनते रहें और संघ सेवा कर भिक्षु शासन के उपकारों से उऋण होने का प्रयास करते रहें।

मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जैन विश्व भारती द्वारा जैन आगम ठाणं पर पूज्यवर के प्रवचनों पर आधारित कृति 'छः बातें ज्ञान की', समणी कुसुमप्रज्ञाजी द्वारा तैयार 'प्रकीर्णक संचय' खंड दो, जय-तिथि पत्रक एवं मित्र परिषद् द्वारा तिथि दर्पण पूज्यवर को समर्पित किए गए। समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने 'प्रकीर्णक संचय' के बारे में विस्तृत जानकारी दी। पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए फ़रमाया - समणी कुसुमप्रज्ञाजी व्याख्या साहित्य के कार्य में अद्वितीय समणी हैं।

इस अवसर पर छाजेड़ परिवार एवं गणमान्य व्यक्तियों द्वारा कन्हैयालाल छाजेड़ स्मृति ग्रंथ - 'जो प्राप्त है वह पर्याप्त है' पूज्यवर को समर्पित किया गया। संपादक डॉ. शांता जैन, विकास परिषद् सदस्य पदमचंद पटावरी एवं मनीषा छाजेड़ ने जीवन ग्रंथ के बारे में अपने प्रस्तुति दी। छाजेड़ परिवार के सदस्यों ने गीत का संगान किया।

पूज्यप्रवर ने श्री कन्हैयालाल छाजेड़ की सेवा भावना को याद करते हुए कहा कि वे धर्मसंघ के एक आदर्श कार्यकर्ता थे। वे तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक रहे और धर्मसंघ के हित में अनेक सेवाएं दीं।

भुज से संबद्ध 'बेटी तेरापंथ की' की सदस्याओं ने गीत की प्रस्तुति दी। भारतीय जनता पार्टी के कच्छ जिलाध्यक्ष देवजी भाई अहीर ने आचार्यश्री के दर्शन कर अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। स्मृतिवन के डायरेक्टर पाण्डेयजी, अमृतवाणी के अध्यक्ष ललित दुगड़, मदनलाल तातेड़, आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी की ओर से मर्यादा कोठारी, आचार्यश्री तुलसी शांति प्रतिष्ठा, गंगाशहर की ओर से हंसराज डागा, प्रेक्षा विश्व भारती के भेरुभाई चौपड़ा, प्रेक्षा इंटरनेशनल के अध्यक्ष अरविंद संचेती ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

161वां मर्यादा महोत्सव : भुज झलकियां

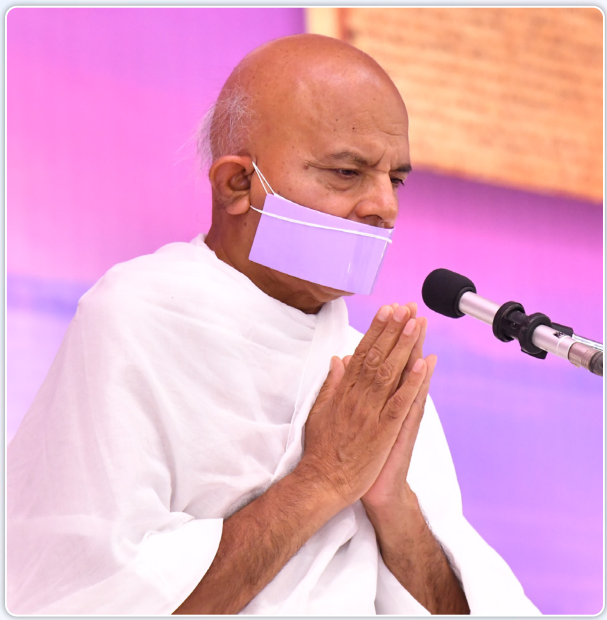

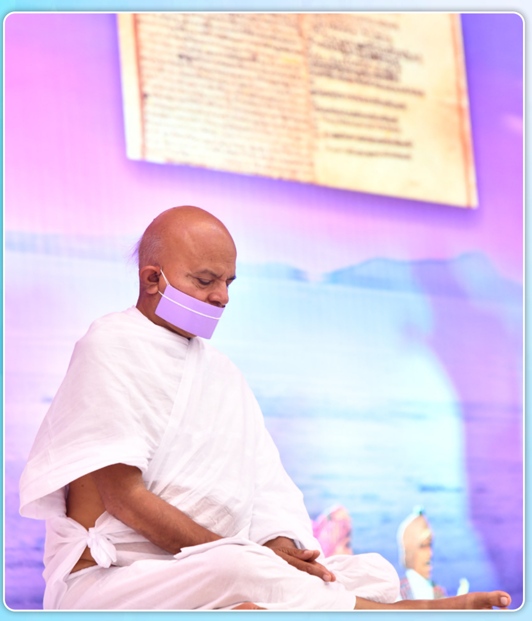

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।